शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 17 अंक : 5 1 दिसम्बर 2024

मार्गशीर्ष, विक्रम संवत् 2081

परामर्श

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

जगदीश प्रसाद सिंघल

शिवानन्द सिन्दनकेरा

जी. लक्ष्मण

महेन्द्र कुमार

❖

सम्पादक

प्रो. शिवशरण कौशिक

❖

संपादक मंडल

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

प्रो. राजेश कुमार जांगिड़

प्रो. ओमप्रकाश पारीक

डॉ. एस.पी. सिंह

भरत शर्मा

❖

प्रबन्ध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक : **बसंत जिंदल**

कार्यालय प्रमुख : **आलोक चतुर्वेदी**

मो. 9828337560

❖

प्रेषण प्रभारी : **नौरंग सहाय 'भारतीय'**

प्रकाशकीय कार्यालय

82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,

जयपुर (राजस्थान) 302001

दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली - 110053

E-mail :

shaikshikmanthan@gmail.com

Visit us at :

www.shaikshikmanthan.com

वार्षिक शुल्क ₹ 300/-

दस वर्षीय शुल्क ₹ 2000/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारत की एकता

❑ डॉ. मंगेश जगतराव डगवाल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय एकता को सशक्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह नीति भारतीय भाषाओं, संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के साथ-साथ शिक्षा को समावेशी और सुलभ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल छात्रों में राष्ट्रीय गर्व और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है, बल्कि भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में भी सहायक है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया गया, तो यह नीति 'विविधता में एकता' के आदर्श को सशक्त करते हुए भारत को एक सशक्त और एकीकृत राष्ट्र में बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

4

अनुक्रम

3.	संपादकीय	-	प्रो. शिवशरण कौशिक
6.	शिक्षा में भारत एवं भारतीयता के पोषण	-	प्रणय कुमार
9.	राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा	-	डॉ. स्मिता देशमुख
13.	राष्ट्रीय एकता के संवैधानिक आधार	-	डॉ. रघुनन्दन शर्मा
16.	भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा	-	डॉ. चेतना उपाध्याय
20.	भाषा, सम्प्रदाय, जाति, क्षेत्र आदि की विविधता...	-	शिशिर कान्त त्रिपाठी
22.	एकता का सेतु : शिक्षा की भूमिका	-	डॉ. श्रीकांत प्रकाश पाटिल
24.	भारत की सांस्कृतिक एकता और अखंडता में ...	-	डॉ. मेहुल पी. दवे
26.	भारतीय शिक्षा पद्धति और सांस्कृतिक चेतना	-	डॉ. चमकौर सिंह
31.	The Role of Education in the Unity of Bharat	-	Dr. TS Girish Kumar
33.	Causal Relationship between Political ...	-	Dr. Arjun Gope
36.	National Unity : A Cornerstone of NEP...	-	Darshan Kumar
39.	National Unity : Constitution and NEP 2020	-	Dr. Pargat S. Garcha
42.	Education and National Integration ...	-	Dr. Rakesh Bharti

Unity in Diversity : Building Bridges Among India's Multicultural Student Communities

❑ **Amit Halder**

Curricular teaching should include lessons on inclusivity, empathy, and 'understanding differences'. Institutions can play a pivotal role in countering divisive narratives by fostering an environment where dialogue and differences are encouraged rather than feared.

28

संपादकीय

प्रो. शिवशरण कौशिक
संपादक

शिक्षा किसी भी समाज व राष्ट्र की प्रगति का मूलाधार है। इससे केवल ज्ञान का ही विकास नहीं होता, अपितु व्यक्तियों के चरित्र का निर्माण तथा सामाजिक सद्भाव के साथ एक समुन्नत राष्ट्र का निर्माण किया जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही देश के नागरिकों में परस्पर विचारों का स्वस्थ आदान-प्रदान होता है जो देश को एक सूत्र में बाँधता है। शिक्षा ही प्रत्येक नागरिक को एक दूसरे की भाषा, संस्कृति, मान्यता, जाति, धर्म आदि का सम्मान करना सिखाती है। यही हमारे साझा-इतिहास, हमारे राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर नागरिकों में एकता की भावना जगाती है।

भारत का राष्ट्रीय स्वभाव मूलत: समन्वयकारी रहा है। भारतीय संस्कृति इस समन्वयकारिणी शक्ति के कारण ही बहुरूपी होते हुए भी मनुष्यों के परस्पर आदान-प्रदान से एकरूपी बनी हुई है। भारत की यह सांस्कृतिक एकता ही भारतीयता है। भारत का निर्माण भी इसकी लोक परंपराओं, जनविश्वासों, रूढ़ियों तथा जीवन पद्धतियों के समन्वय से ही हुआ है। भारतीय समाज में इस समन्वय के आधार स्रोत इसके धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष आदि चारों पुरुषार्थों के साथ श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, उपनिषदों आदि के संदर्भों में दृष्टिगोचर होते हैं तथा ये भारत की राष्ट्रीय एकता के केंद्रीय तत्त्व हैं। भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान भी है, भाव प्रधान भी। परंपरा से प्राप्त मूल्य, मातृभावना, पारिवारिक जीवन, सामाजिक दृष्टि, राष्ट्रीय एकता, कर्म, ज्ञान और भक्तियोगादि चारों मार्गों के समन्वय ने भारत को एकरूप बनाए रखा है। अंततोगत्वा धर्म का वास्तविक अर्थ भी मनुष्य धर्म ही है, जो मनुष्य में मनुष्यत्व की सृष्टि करता है।

भारत की राष्ट्रीय एकता में इसके विभिन्न प्रांतों, जनपदों के मांगलिक अवसरों, उत्सवों का भी बड़ा महत्त्व है। मांगलिक अवसर पर तरह-तरह के अचार -अनुष्ठान होते हैं। नूतन गृहप्रवेश, संतानोत्पत्ति, विवाह आदि के अवसर पर समूचे भारत में सामूहिकता के साथ मंगलसूचक आयोजन होते हैं। इनका एकीकृत रूप भारतीय संस्कृति में है। इसीलिए शिक्षा नीति की योजनानुसार इन भारतीय उत्सवों, मांगलिक आयोजनों, पर्वों व त्योहारों का समावेश पाठ्यपुस्तकों में भी निरंतर किया जाता रहा है। लेकिन अशिक्षा के कारण आज भी हम देश के कई भागों में सांप्रदायिकता तथा विभाजनकारी घटनाओं के वीभत्स दृश्य देखते-सुनते हैं। हम जानते हैं कि एकता की भावना से ही हमारा राष्ट्र स्थिर विकास की योजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन कर सकता है। सरकारों का भी यह परमदायित्व है कि वे प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ करवारकर योग्य एवं शिक्षित नागरिकों का निर्माण करें। तभी सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय एकता साकार हो सकेगी।

वस्तुत: शिक्षा भारत की मौलिक एकता का प्रमुख आधार है। भारत की शिक्षा-पद्धति में भारत की एकता के आधार-सूत्रों की उपस्थिति पूर्व में भी थी, आज भी है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के वातावरण में शिक्षित होते युवाओं में अवश्य ही कुछ भटकाव आया है। फिर भी भारतीय संस्कृति की उदारता, व्यापकता तथा प्रगतिशीलता को विश्व के अन्य देशों ने भी स्वीकार किया है। विविध जनधाराओं का योग इतना किसी देश की संस्कृति को नहीं मिला जितना भारत को मिला है। और इसी कारण भारत अपनी सार्वदेशिक संस्कृति के संस्कारों से शांति तथा प्रगति के मार्ग पर निरंतर चल रहा है। यह भी एक सचाई है कि वैश्विक अंतरराष्ट्रीयता भारत का व्यवहार है तथा राष्ट्रीयता भारत का चरित्र। जबकि मार्क्सवादी विचारधारा के लोग सदैव राष्ट्रीयता का तिरस्कार कर तथाकथित अंतरराष्ट्रीयता कि वकालत करते रहे हैं। उनकी प्रतिबद्धता मार्क्सवाद के उस विश्वदर्शन से रही है जिसका केंद्र उपनिवेशकाल में मास्को था। तब भी मार्क्सवादियों को भारत की आजादी से कोई लेना-देना नहीं था। भारत में जब गांधी जी ने अगस्त 1942 ईस्वी में 'भारत छोड़ो' का नारा दिया तब भी भारत के साम्यवादी सोवियत संघ की रक्षा के लिए बेहाल थे। उन्हें भारत की स्वाधीनता या 'दिल्ली' के प्रति कोई रुचि न थी। उन्होंने 'भारत छोड़ो' आंदोलन का भी विरोध किया तथा राष्ट्रवादियों के विरुद्ध उपनिवेशवादियों का साथ दिया। आज भी वामपंथियों का भारत के सनातन, भारत की सांस्कृतिक मौलिकता तथा भारतीयता से निरन्तर विरोध बना हुआ है। गांधीजी के 'भारत छोड़ो' आंदोलन के विरोध में विश्व मानवतावाद चलाने वाले वामपंथी विचारधारा के लोगों पर उस समय राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

चिल्लाते हैं विश्व-विश्व
कह जहाँ चतुर नार ज्ञानी ।
बुद्धि भीरु सकते न डाल
जलते स्वदेश पर पानी ।।
जहाँ मास्को के रणधीरों के
गुण गाए जाते।
दिल्ली के रुधिराक्त वीर को
देख लोग सकुचाते।।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के प्रसार ने भारत की युग-चेतना में जो राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक प्रवृत्तियाँ विकसित की हैं उनमें अधिकांश की भूमिका भारत के विकास तथा एकता की दृष्टि से क्या रही? शैक्षिक मंथन का यह अंक इन्हीं विषयों के मूल्यांकन का एक विनम्र प्रयास है। ❑

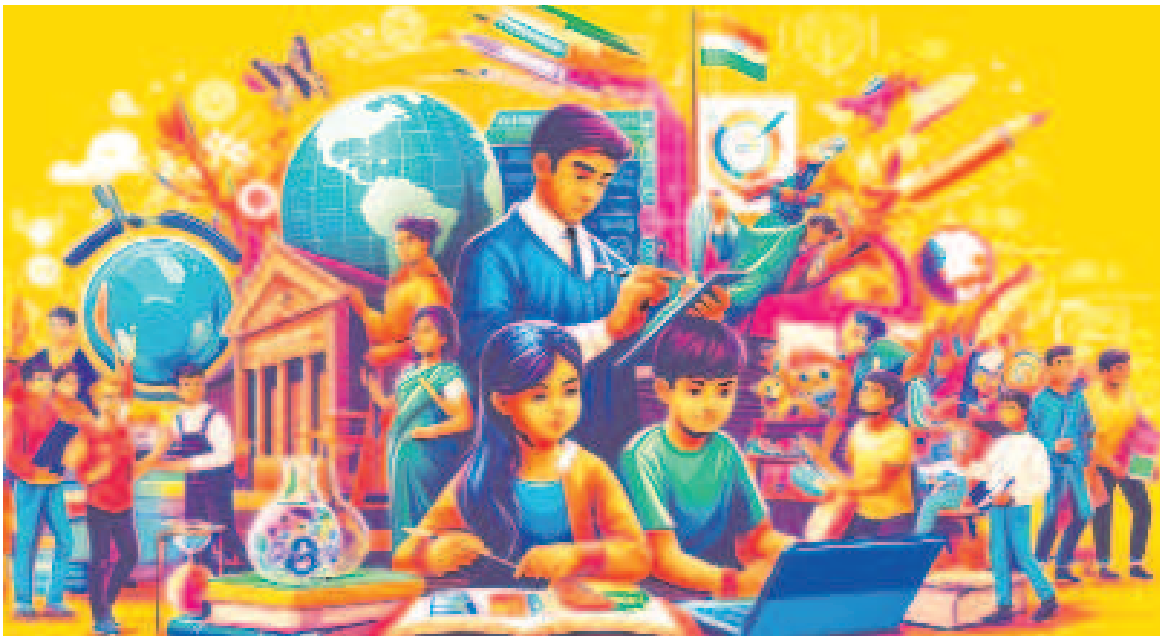

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारत की एकता

डॉ. मंगेश जगतराव डगवाल
सहयोगी प्राध्यापक व विभाग प्रमुख वनस्पतीशास्त्र विभाग, श्रीमती राधाबाई सारडा महाविद्यालय, अंजनगाव सुर्जी, जि. अमरावती

भारत अपनी विविधता में एकता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ, धर्म, परंपराएँ और संस्कृतियाँ सह-अस्तित्व में हैं, जो इस देश को अद्वितीय बनाती हैं। यह विविधता न केवल हमारी संस्कृति की पहचान है, बल्कि हमारी एकता का आधार भी है। इसी को ध्यान में रखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को तैयार किया गया है। यह नीति शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीयता के आदर्शों और मूल्यों को सशक्त करने का साधन मानती है। इसमें भारतीय भाषाओं, संस्कृति और नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ शिक्षा को समावेशी और सुलभ बनाने का लक्ष्य है।

हमारी पारंपरिक शिक्षा पद्धति में जहाँ केवल पठन-पाठन और परीक्षा पर बल दिया जाता था, वहीं अब समय की मांग है कि शिक्षा को अधिक समावेशी, व्यावहारिक और मूल्य-आधारित बनाया जाए। पहले की शिक्षा पद्धति ने छात्रों को केवल परीक्षा के माध्यम से सफलता की परिभाषा दी थी, लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा का उद्देश्य छात्र को समाज के प्रति जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाना है। इसे ध्यान में रखते हुए, एनईपी में नई पद्धतियों का समावेश किया गया है, जो विद्यार्थियों में कौशल, समावेशिता और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देती हैं।

वैश्विक नागरिकता का विचार केवल विभिन्न देशों के बीच समझ, सहिष्णुता और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना है। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के साथ-साथ, वैश्विक नागरिकता की शिक्षा भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। एनईपी 2020 में यह दृष्टिकोण है कि शिक्षा के माध्यम से छात्रों में न केवल भारतीयता का गौरव विकसित किया जाए, बल्कि उन्हें अंतरराष्ट्रीय समझ, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्विक समस्याओं का समाधान करने की तर्क क्षमता भी दी जाए। इससे 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को बढ़ावा मिलेगा और भारत को वैश्विक स्तर पर सम्मान मिलेगा।

शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह समाज, राज्य और राष्ट्र की एकता को भी बढ़ावा देने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा के माध्यम से हम न केवल अपने राष्ट्रीय आदर्शों को समझ सकते हैं, बल्कि वैश्विक एकता के लिए भी काम कर सकते हैं। एनईपी 2020 में यह प्रावधान किया गया है कि शिक्षा के माध्यम से एक ऐसे समाज का निर्माण किया जाए, जहाँ सभी नागरिकों में समानता, न्याय और प्रेम की भावना हो। यह राज्य और राष्ट्र के बीच के भेदभाव को समाप्त करने में मदद करेगा। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर भी यह नीति राष्ट्रीयता और वैश्विक एकता दोनों को प्रोत्साहित करने में सहायक साबित होगी।

एनईपी 2020 में भारतीय भाषाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन पर विशेष बल दिया

 ISSN 2581-4133

गया है। प्रारंभिक शिक्षा को मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा या स्थानीय भाषा में प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। यह छात्रों को उनकी भाषाई और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का एक महत्त्वपूर्ण कदम है। नीति के तहत तीन-भाषा सूत्र को अपनाया गया है, जिसमें छात्रों को उनकी मातृभाषा, हिंदी और एक अन्य भारतीय भाषा सिखाई जाएगी। यह प्रावधान न केवल भाषा के प्रति छात्रों का सम्मान बढ़ाएगा, बल्कि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संवाद को भी मजबूत करेगा। भाषाई विविधता भारत की विशेषता है, और यह नीति इसे सहेजने का प्रयास करती है।

एनईपी 2020 भारतीय कला, संगीत, नृत्य, साहित्य और लोक परंपराओं को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाती है। यह पहल छात्रों को उनकी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ती है और उन्हें अपने इतिहास और परंपराओं पर गर्व करना सिखाती है। यह न केवल भारतीय संस्कृति के संवर्धन का माध्यम है, बल्कि छात्रों को वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बनाने के लिए भी प्रेरित करता है। छात्रों को भारतीय इतिहास, परंपराओं और विज्ञान में योगदान के बारे में शिक्षित करना, उनमें आत्मसम्मान और राष्ट्रप्रेम की भावना को विकसित करता है।

शिक्षा का उद्देश्य न केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि छात्रों में नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास करना भी है। एनईपी 2020 में नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। इसमें सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, समानता और संविधान के आदर्शों को सिखाने पर बल दिया गया है। यह नीति छात्रों में भारतीय संविधान के आदर्शों और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता पैदा करती है। इसके साथ ही, यह छात्रों को सहानुभूति, करुणा और आपसी सहयोग जैसे गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्त्वपूर्ण पहलू शिक्षा को समावेशी और समान बनाना है। यह समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती है। बालिका शिक्षा, दिव्यांग छात्रों और आदिवासी समुदायों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर को समान बनाने के लिए संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित किया गया है। यह समावेशी दृष्टिकोण समाज में समानता और समरसता को बढ़ावा देता है और भारतीय एकता को सशक्त करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय एकता को सशक्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह नीति भारतीय भाषाओं, संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के साथ-साथ शिक्षा को समावेशी और सुलभ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल छात्रों में राष्ट्रीय गर्व और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है, बल्कि भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में भी सहायक है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया गया, तो यह नीति 'विविधता में एकता' के आदर्श को सशक्त करते हुए भारत को एक सशक्त और एकीकृत राष्ट्र में बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

एनईपी 2020 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक और भाषाई आदान-प्रदान के कार्यक्रमों का समर्थन करती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को भारत के विभिन्न हिस्सों की भाषाओं, परंपराओं और रीति-रिवाजों से परिचित होने का अवसर मिलता है। यह पहल छात्रों के बीच संवाद और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देती है। इसके साथ ही, यह राष्ट्रीय एकता को और मजबूत करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को सामाजिक और राष्ट्रीय विकास का एक प्रमुख साधन मानती है। यह नीति शिक्षा के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने और समानता तथा समावेशिता को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। यह युवाओं को रोजगारोन्मुखी कौशल प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करती है। नीति का उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच की खाई को पाटना और समाज में हर वर्ग को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना है।

चुनौतियाँ और समाधान

एनईपी 2020 के कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती भारतीय भाषाओं और संस्कृतियों की विविधता को ध्यान में रखते हुए सभी को समान महत्त्व देना है। इसके अलावा, क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी को दूर करना भी आवश्यक है। इन समस्याओं का समाधान डिजिटल शिक्षण सामग्री का विकास और शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय एकता को सशक्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह नीति भारतीय भाषाओं, संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के साथ-साथ शिक्षा को समावेशी और सुलभ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल छात्रों में राष्ट्रीय गर्व और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है, बल्कि भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में भी सहायक है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया गया, तो यह नीति 'विविधता में एकता' के आदर्श को सशक्त करते हुए भारत को एक सशक्त और एकीकृत राष्ट्र में बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। ❑

शिक्षा में भारत एवं भारतीयता के पोषण

प्रणय कुमार
शिक्षाविद एवं
वरिष्ठ स्तंभकार

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के पूर्व अध्यक्ष, शिक्षा बचाओ आंदोलन के संयोजक, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के पूर्व महामंत्री एवं प्रख्यात शिक्षाविद दीनानाथ जी बत्रा का गत 7 नवंबर, 2024 को दिल्ली में निधन हो गया। एक ओर उनके जीवन में तपस्वियों जैसी अपरिग्रही वृत्ति, ध्येयनिष्ठा, अनुशासनबद्धता थी तो दूसरी ओर उनमें अपने ध्येय के लिए संघर्ष व पुरुषार्थ करने का अद्भुत साहस एवं अडिग संकल्प था। इसलिए योद्धा-तपस्वी विशेषण उनके लिए सर्वाधिक उपयुक्त रहेगा। उनका पूरा जीवन त्याग, साधना व संघर्ष से भरा रहा। प्रारंभ में वे कुछ वर्ष प्रचारक भी रहे। गृहस्थ जीवन में प्रवेश के पश्चात भी संघ के सेवाव्रती प्रचारकों की भाँति उनका जीवन-ध्येय 'तेरा तुझको अर्पण' का बना रहा। समाज व राष्ट्र के लिए आयु के अंतिम क्षण तक वे अहर्निश एवं अनथक कार्य करते रहें। संघ की शाखा में मिले संस्कारों के कारण विद्यार्थी-काल से ही उनके मन में समाज व देश के लिए कुछ शुभ, सुंदर व सार्थक करने की जो भावना पलती थी, समय व्यतीत होने के साथ-साथ वह और अधिक दृढ़ एवं बलवती होती चली गई। विभाजन की विभीषिका उन्होंने स्वयं झेली थी। विभाजन के कारण उन्हें परिवार समेत अपने जन्मस्थल डेरा गाजी खाँ (अब पाकिस्तान) छोड़कर भारत आना पड़ा था। विभाजन के कारण हिंदुओं के समक्ष उत्पन्न विषम एवं भयावह परिस्थितियों के वे केवल भुक्तभोगी या मूकद्रष्टा मात्र नहीं थे, अपितु उन्होंने दंगाइयों के शिकार हिंदुओं को पाकिस्तान से सुरक्षित भारत लाने तथा उनके पुनर्वास आदि में प्रत्यक्ष योगदान भी दिया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ प्रचारक ब्रह्मदेव शर्मा ने अपने एक उद्बोधन में कहा था कि ''स्वयंसेवकों को शिक्षक या वकील बनना चाहिए, क्योंकि उनके पास देश व समाज का काम करने के लिए पर्याप्त अवसर एवं समय होता है'', तभी से उनके मन में शिक्षक बनने का संकल्प जगा और यह संकल्प इतना सुदृढ़ था कि वे न केवल एक अच्छे, ख्यातिलब्ध एवं राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक बने, अपितु आगे चलकर संपूर्ण शिक्षा-जगत के लिए जीवंत प्रेरणा स्रोत एवं अनुकरणीय आदर्श भी बन गए। शिक्षक एवं प्राचार्य के रूप में उनके व्यापक अनुभव एवं सुदीर्घ सेवाओं का लाभ केवल कुछेक विद्यालयों एवं वहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह विद्या भारती, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं शिक्षा बचाओ आंदोलन समिति के माध्यम से संपूर्ण देश में पहुँचा। शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उनके प्रयोगों को भरपूर सफलता व सराहना मिली और विद्या भारती से लेकर अन्यान्य सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में भी उन्हें अपनाया गया। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि व्यावसायिक दौड़ एवं आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा से दूर विद्या भारती आज जिस ऊँचे व श्रेष्ठ वैचारिक अधिष्ठान पर खड़ी है, उसकी पृष्ठभूमि में भाऊराव देवरस, कृष्णचंद्र गाँधी, लज्जाराम तोमर, ब्रह्मदेव शर्मा, दीनानाथ बत्रा जैसे अनेकानेक साधकों की साधना एवं विचार-दृष्टि ही मजबूत आधारशिला का कार्य करती रही

 ISSN 2581-4133

है। अन्यथा पश्चिम से आयातित भौतिकता की आँधी, सिनेमा, टेलीविजन एवं ओटीटी से उपजी अपसंस्कृति की बयार तथा मार्क्स-मैकॉले की मानस संतानों द्वारा पोषित-पालित परकीय वैचारिकी के मध्य विद्या भारती जैसे पवित्र शैक्षिक अभियान व अनुष्ठान का उत्तरोत्तर आगे बढ़ना तथा उसे समाज का व्यापक समर्थन मिलना, सरल व संभव नहीं था। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की संकल्पना को साकार करने तथा उसके कार्य एवं संगठन को विस्तार देने में भी उनकी महती व अग्रणी भूमिका थी। शिक्षा बचाओ आंदोलन के तो वे प्रणेता ही थे।

दीनानाथ बत्रा भारत और भारतीयता के प्रबल पक्षधर एवं पैरोकार थे। पक्षधर होना या पैरोकारी करना एक बात है, परंतु जिसके पक्ष में खड़े हैं, उसके लिए निरंतर अध्ययन करना, शोध करना, लिखना-पढ़ना और आवश्यकता पड़ने पर उसके लिए सड़क पर उतरकर आंदोलन करना या न्यायालय के दरवाजे खटखटाना दूसरी बात। जब हम छोटे-छोटे स्वार्थ, प्रलोभन, सम्मान-पुरस्कार के मोहपाश, पुलिस-प्रशासन एवं निरंकुश सत्ताओं के दबाव तथा अहं के टकराव आदि के कारण झुकते, समझौता करते या पाला बदलते बुद्धिजीवियों को देखते हैं तो बत्रा जी जैसे ध्येयनिष्ठ योद्धा का महत्त्व व वैशिष्ट्य समझ में आता है। वे अपने ध्येय एवं संकल्प के लिए बड़ी-से-बड़ी शक्तियों से लड़ने-भिड़ने-टकराने की सामर्थ्य रखते थे। विचारधारा को ताक पर रखकर सत्ता-प्रतिष्ठानों से समझौता-समन्वय करने का भाव उनमें कभी नहीं रहा, न ही प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचने के बाद उनमें बुद्धिजीवियों में पाई जाने वाली चयनित-सुविधावादी तटस्थता ही देखने को मिली। सबको साथ लेकर चलने की सांगठनिक कुशलता एवं कार्यकर्त्ताओं के हितचिंतन को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए भी उन्होंने कभी तत्त्व-दर्शन को दृष्टिपथ से ओझल नहीं होने दिया। साहस उनका इतना प्रबल

क्या शिक्षा के भारतीयकरण एवं पाठ्यक्रम-परिवर्तन की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है या उसकी गति बहुत धीमी एवं सुस्त है? सुखद है कि बत्रा जी जैसे अनेक शिक्षाविदों के सतत चिंतन, अध्ययन, अनुभव, प्रयास एवं पुरुषार्थ के बल पर देश को राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 जैसी युगांतकारी नीति तो मिल गई, पर क्या उसके क्रियान्वयन की गति एवं दिशा संतोषजनक है? ऐसे सभी प्रश्नों का यथार्थ, प्रामाणिक एवं समग्र उत्तर बत्रा जी को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

था कि 30 मई, 2001 को उन्होंने तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी को नोटिस भेजकर कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव में विद्या भारती के प्रति की गई प्रतिकूल, अपमानजनक एवं नकारात्मक टिप्पणी को हटाने की पुरजोर माँग की। उन्होंने तमाम प्रामाणिक तथ्यों, तर्कों एवं साक्ष्यों के द्वारा कांग्रेस द्वारा लगाए गए इस आरोप को निराधार सिद्ध किया कि ''विद्या भारती की पाठ्यपुस्तकों में अल्पसंख्यकों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण हैं एवं वे जाति-व्यवस्था, सती-प्रथा एवं बाल-विवाह को उचित ठहराती हैं।'' कांग्रेस के पास उनके अकाट्य तर्कों, प्रामाणिक तथ्यों एवं विपुल मात्रा में प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों आदि का कोई ठोस प्रत्युत्तर नहीं था। 2006 में उन्होंने एक जनहित याचिका दायर कर एनसीईआरटी की सामाजिक विज्ञान एवं इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में प्रकाशित सामग्री पर 70 आपत्तियाँ उठाई। उन आपत्तियों के औचित्य एवं आधार का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उनमें से कुछ सामग्री में लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल, अरबिंदो घोष एवं भगत सिंह को 'उग्रवादी' तथा प्राचीन काल में ब्राह्मणों एवं आर्यों को गोमांस का सेवन करने वाला तक बताया गया था। बत्रा जी ने सप्रमाण यह सिद्ध किया कि ये मनगढ़ंत, मिथ्या एवं भ्रामक बातें हैं और इनका ऐतिहासिक तथ्यों से कोई लेना-देना नहीं है।

बौद्धिक सत्य के प्रति उनके आग्रह, संघर्ष व पुरुषार्थ का ही परिणाम था कि दिल्ली उच्च न्यायालय ने उनकी आपत्तियों का संज्ञान लेते हुए एनसीईआरटी को इन आपत्तियों का अध्ययन करने के लिए एक समिति बनाने का निर्देश दिया। कामुकता एवं भोगवादी

प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से छद्म वेष में बाजारवादी शक्तियों और उनके बौद्धिक समर्थकों ने जब विद्यालयी स्तर पर यौन-शिक्षा को संपूर्ण देश में अनिवार्य किए जाने की माँग उठाई, तब दीनानाथ बत्रा भारतीय समाज पर पड़ने वाले उसके दुष्प्रभावों एवं संभावित खतरों को समझने वाले प्रमुख व्यक्ति थे। तब उनके तार्किक प्रतिरोध के कारण ही कुछ प्रादेशिक सरकारों ने अपने राज्य में यौन शिक्षा को विद्यालयी स्तर पर अनिवार्य करने से मना कर दिया था। 2008 में उन्होंने शिक्षा बचाओ आंदोलन की ओर से दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास के पाठ्यक्रम में से एके रामानुजन के निबंध ''थ्री हंड्रेड रामायणाज : फाइव एग्जांपल एंड थ्री थॉट्स ऑन ट्रांसलेशन'' को हटाने की माँग की, परिणामस्वरूप 2011 में विश्वविद्यालय के अकादमिक परिषद द्वारा उक्त निबंध को पाठ्यक्रम से हटा लिया गया। 3 मार्च, 2010 को उन्होंने वेंडी डोनिगर, पेंगुइन समूह, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं पेंगुइन इंडिया की सहायक कपंनी को एक वैधानिक चेतावनी भेजकर ''द हिंदुज : एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री'' में उल्लिखित सामग्रियों पर कई आपत्तियाँ उठाई। उन आपत्तियों का संज्ञान न लिए जाने पर 2011 में उन्होंने डोनिगर एवं पेंगुइन प्रकाशन के विरुद्ध धार्मिक समुदायों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने तथा जान-बूझकर अपमानित किए जाने की मंशा से किए गए कृत्यों के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 295ए के अंतर्गत मुकदमा भी दायर किया, अंततः फरवरी 2014 में पेंगुइन इंडिया को इस पुस्तक की मुद्रित सभी प्रतियाँ वापस लेने के लिए बाध्य होना पड़ा और बिना बिकी प्रतियों को नष्ट भी करना पड़ा।

2011 में ही उन्होंने वामपंथी विचारधारा से प्रेरित पत्रिका 'द फ्रंटलाइन' के संपादक एन. राम को 'शॉर्टकट टू हिंदू राष्ट्र' शीर्षक से आवरण-कथा प्रकाशित करने के लिए वैधानिक चेतावनी भेजी। भारतवर्ष की महान परंपरा में किसी की मृत्यु को वैचारिक मतभेद या विरोध आदि प्रकट करने का अवसर नहीं माना जाता, परंतु दीनानाथ बत्रा के प्रति 'द फ्रंटलाइन' पत्रिका की चिढ़ या घृणा का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उनकी मृत्यु के मात्र दो दिनों बाद उसमें ''दीनानाथ बत्रा : द एजुकेशनिस्ट हू वेज्ड वार एगेंस्ट नॉलेज'' शीर्षक से लेख छपा। उनके मरणोपरांत भी उनके विरुद्ध विषवमन करने में इस पत्रिका ने कोई संकोच नहीं दिखाया। उन्होंने वेंडी डोनिगर की एक और पुस्तक 'ऑन हिंदुइज्म' के लिए एलेफ बुक कंपनी, मेघा कुमार की पुस्तक ''सांप्रदायिकता और यौन हिंसा : अहमदाबाद 1969 से'' तथा शेखर बंद्योपाध्याय की पुस्तक ''फ्रॉम प्लासी टू पार्टीशन : ए हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया'' के लिए ओरिएंट ब्लैकस्वान को कानूनी नोटिस भेजा। उनके इन प्रयासों से जहाँ एक ओर जनसाधारण में हिंदू धर्म व सनातन संस्कृति के संरक्षण-संपोषण के प्रति व्यापक जागरुकता आई, वहीं अराष्ट्रीय एवं सनातन विरोधी शक्तियों में यह संदेश भी गया कि तथ्यहीन व निराधार सामग्री प्रस्तुत करने पर वैधानिक कार्रवाई झेलनी पड़ सकती है। सोचकर देखें कि सनातन विरोधी बौद्धिक शक्तियों एवं गतिविधियों पर उनकी कितनी सजग व सतर्क दृष्टि रही होगी तथा उनकी नैतिक शक्ति कितनी प्रबल रही होगी कि वे अकेले उन शक्तिशाली संगठनों एवं साधन-संपन्न प्रकाशकों से मोर्चा लेते रहे और उनके मनमानेपन एवं निरंकुशता पर एक सीमा तक लगाम लगाए रखी। उनके महाप्रयाण के पश्चात यह विचार करना सर्वथा उचित रहेगा कि शिक्षा में जिन मूल्यों, विचारों एवं आदर्शों की स्थापना के लिए दीनानाथ बत्रा जैसे योद्धा-तपस्वी जीवनपर्यंत संघर्षरत रहे, उसमें कहाँ तक और कितनी सफलता मिली? क्या शिक्षा के भारतीयकरण एवं पाठ्यक्रम-परिवर्तन की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है या उसकी गति बहुत धीमी एवं सुस्त है? सुखद है कि बत्रा जी जैसे अनेक शिक्षाविदों के सतत चिंतन, अध्ययन, अनुभव, प्रयास एवं पुरुषार्थ के बल पर देश को राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 जैसी युगांतकारी नीति तो मिल गई, पर क्या उसके क्रियान्वयन की गति एवं दिशा संतोषजनक है? ऐसे सभी प्रश्नों का यथार्थ, प्रामाणिक एवं समग्र उत्तर बत्रा जी को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❑

 ISSN 2581-4133

राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा

डॉ. स्मिता रावसाहेब देशमुख
प्राचार्य,
मातोश्री विमलाबाई देशमुख महाविद्यालय,
अमरावती, महाराष्ट्र

शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज की नींव को मजबूत करने, राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने और विविधताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने का एक अत्यंत प्रभावी उपकरण है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ, धर्म और जातियाँ मौजूद हैं, शिक्षा एक ऐसा माध्यम बन जाती है जो समाज को एकजुट करने, समानता और समरसता की भावना को बढ़ावा देने का कार्य करती है।

राष्ट्र की एकता तभी संभव है जब उसके नागरिकों में समान विचार, साझा मूल्य और एक राष्ट्र के प्रति निष्ठा हो। यह सभी तत्त्व शिक्षा के माध्यम से ही विकसित होते हैं। शिक्षा न केवल बौद्धिक विकास का अवसर प्रदान करती है, बल्कि यह हर नागरिक को उसके कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक कर, समाज में एकजुटता और शांति का माहौल उत्पन्न करती है।

महात्मा गांधी ने शिक्षा को एक सशक्त माध्यम माना था, जो समाज में सुधार और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का काम करता है। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि यह समाज के समग्र कल्याण और राष्ट्रीय एकता की ओर भी अग्रसर होनी चाहिए। आज, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के तहत, शिक्षा का उद्देश्य न केवल ज्ञान और तकनीकी कौशल प्रदान करना है, बल्कि यह बच्चों और युवाओं को समग्र नागरिकता, आपसी समझ, और राष्ट्रीय एकता के मूल्यों के प्रति जागरूक करना भी है।

इस प्रकार, शिक्षा राष्ट्रीय एकता के निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे प्रत्येक नागरिक का योगदान राष्ट्र की प्रगति में सुनिश्चित हो सके।

राष्ट्रनिर्माण में संतुलित शिक्षा का सहयोग और भारतीय परंपरा का योगदान

भारतीय परंपरा और संस्कृति ने हमेशा शिक्षा को सर्वोच्च स्थान दिया है, क्योंकि हमारे प्राचीन समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण, समाज में सहिष्णुता और एकता का संवर्धन, और जीवन में नैतिक मूल्यों की नींव रखना था। ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' (हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाओ) जैसी प्राचीन मंत्रों के माध्यम से हमारे पूर्वजों ने यह संदेश दिया कि शिक्षा केवल बौद्धिक उन्नति के लिए नहीं, बल्कि आत्मिक और नैतिक उन्नति के लिए भी होनी चाहिए।

राष्ट्रनिर्माण एक दीर्घकालिक और सामूहिक प्रयास है, जिसमें हर नागरिक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। इसके लिए जरूरी है कि समाज के प्रत्येक सदस्य को न केवल व्यावसायिक और तकनीकी ज्ञान, बल्कि सुसंस्कृत और समाजिक शिक्षा भी प्राप्त हो, ताकि वह एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बन सके। शिक्षा इस प्रक्रिया का केंद्रीय तत्त्व है, क्योंकि यह लोगों को न केवल आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि उन्हें अपने समाज और राष्ट्र के प्रति

अपनी जिम्मेदारियों को समझने के लिए भी प्रेरित करती है।

हमारी शिक्षा प्रणाली ने हमेशा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सभी सुखी हों) के सिद्धांत पर आधारित सामाजिक समरसता, भाईचारे और मानवता की शिक्षा दी है। यह वही परंपरा है, जो हमारे समाज में समग्र और समावेशी विकास को प्रोत्साहित करती है। भारतीय परंपरा में शिक्षा ने हमेशा राष्ट्रनिर्माण में एक सकारात्मक और सशक्त भूमिका निभाई है, और यही परंपरा आज भी हमारे शिक्षा के उद्देश्यों में जीवित है।

शिक्षा न केवल व्यक्तिगत और सामाजिक विकास का एक महत्त्वपूर्ण साधन है, बल्कि यह राष्ट्रनिर्माण के लिए भी आवश्यक है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ, और धर्म हैं, शिक्षा ही वह माध्यम है जो राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है और समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने का कार्य करती है। भारतीय दार्शनिकों और समाज सुधारकों ने हमेशा शिक्षा के महत्त्व को समझा और इसे राष्ट्र की प्रगति और सामाजिक सुधारों के लिए एक शक्तिशाली उपकरण माना।

शिक्षा का महत्त्व : राष्ट्र निर्माण और सामाजिक विकास के लिए एक आवश्यक साधन

शिक्षा का महत्त्व भारतीय समाज में समय की परिधि से बाहर जाकर एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में माना जाता है। शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का मार्ग है, बल्कि यह एक राष्ट्र की प्रगति, सामाजिक समरसता और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए भी आवश्यक है। भारत जैसी विविधता से भरी भूमि पर, जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ, भाषाएँ और धर्म हैं, शिक्षा ही वह साधन है जो समाज को एकजुट करने, समानता की भावना को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय विकास को सुनिश्चित करने में मदद करती है।

1. राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका

भारत की ऐतिहासिक धरोहर और सांस्कृतिक विविधताओं को देखते हुए, यह आवश्यक हो जाता है कि हम एक साझा राष्ट्रीय पहचान और उद्देश्यों के तहत शिक्षा की दिशा तय करें। शिक्षा राष्ट्र के नागरिकों को न केवल व्यक्तिगत सफलता की ओर मार्गदर्शन करती है, बल्कि यह सामूहिक रूप से देश के सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे को सशक्त भी बनाती है।

महात्मा गांधी ने शिक्षा को एक शक्तिशाली औजार माना था, जो भारतीय समाज में सामाजिक समता और समानता ला सकता है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबों से ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि यह समाज को सुधारने और उसे एकजुट करने के लिए होनी चाहिए। गांधीजी के अनुसार, ''शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भरता और सामाजिक सुधार है, न कि केवल तकनीकी दक्षता प्राप्त करना''।

2. सामाजिक समरसता और एकता में शिक्षा का योगदान

भारत में विभिन्न धर्म, जाति, भाषा, और संस्कृति के लोग निवास करते हैं। इस विविधता के बावजूद, अगर हमें एकजुट रहकर एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करना है, तो यह आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली में सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा दें। शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं होना चाहिए, बल्कि यह व्यक्तियों को समाज में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करना चाहिए।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने शिक्षा को एक सशक्त उपकरण माना था, जिसके माध्यम से समाज के वंचित वर्गों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा सकता है। उन्होंने यह कहा था कि ''शिक्षा सामाजिक और राजनीतिक समानता को प्राप्त करने का सबसे प्रभावी साधन है''। उनका मानना था कि शिक्षा से ही हम समाज में व्याप्त असमानता और भेदभाव को समाप्त कर सकते हैं, और हर व्यक्ति को समान अवसर दे सकते हैं।

3. आर्थिक सशक्तिकरण और शिक्षा

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि यह व्यक्ति को आर्थिक रूप से सशक्त बनाए और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान करने योग्य बनाए। आज की वैश्विक और प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में, अगर भारत को एक शक्तिशाली और समृद्ध राष्ट्र बनाना है, तो उसकी युवा पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है।

भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) इस दिशा में कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाती है, जो युवा और बालकों को रोजगार योग्य कौशल, प्रौद्योगिकी में निपुणता, और बेहतर जीवन कौशल से तैयार करती है। इसके माध्यम से, शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम और परीक्षा तक सीमित नहीं रखा जाता, बल्कि इसमें कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक जीवन कौशल, समग्र विकास, और तकनीकी दक्षता को भी महत्त्व दिया जाता है।

4. भारतीय शिक्षा प्रणाली के सुधार और नवीकरण की आवश्यकता

आज के समय में, जब भारत तेजी से वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रहा है, तब हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को नवीनतम और अत्याधुनिक बनाना जरूरी हो गया है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को और अधिक समावेशी, प्रासंगिक और उन्नत बनाने के लिए कई बदलावों की आवश्यकता है। यह बदलाव सिर्फ पाठ्यक्रम में नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के मानसिक विकास, व्यक्तित्व निर्माण, और नैतिक शिक्षा में भी होने चाहिए।

भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे नागरिक का निर्माण करना है जो अपने देश के प्रति जागरूक, जिम्मेदार और समर्पित हो। ''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं'' – यह कथन नेल्सन मंडेला का है, और यह भारत में शिक्षा के महत्त्व को पूरी तरह से रेखांकित करता है।

5. शिक्षा और सशक्तिकरण : महिला शिक्षा का महत्त्व

भारत में महिलाओं की शिक्षा को लेकर समय-समय पर कई सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ रही हैं, लेकिन आज हम यह देख रहे हैं कि महिला शिक्षा का स्तर लगातार बढ़ रहा है। महिला शिक्षा के बढ़ते प्रभाव ने सामाजिक बदलाव और महिलाओं के अधिकारों के लिए एक नया रास्ता खोला है। ''जब हम महिलाओं को शिक्षा देते हैं, तो हम पूरे समाज को शिक्षा दे रहे होते हैं'' - इस कथन में शिक्षा के महत्त्व को पूरी तरह से महसूस किया जा सकता है, विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण के संदर्भ में।

भारतीय समाज में शिक्षा के प्रति यह दृष्टिकोण प्राचीन समय से ही विद्यमान था। भारतीय दर्शन और परंपरा में शिक्षा को न केवल ज्ञान अर्जन, बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक उन्नति का मार्ग माना गया। भारतीय महान विचारकों जैसे पं. मदन मोहन मालवीय, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, रवींद्रनाथ ठाकुर (रवींद्रनाथ ठाकुर टैगोर), और पंजाबराव देशमुख ने अपने विचारों के माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा देने का प्रयास किया, जिससे राष्ट्र की प्रगति और एकता में योगदान हो सके।

पं. मदन मोहन मालवीय के विचार

पं. मदन मोहन मालवीय ने भारतीय शिक्षा को अपनी सांस्कृतिक और नैतिक जड़ों से जोड़ने का प्रयास किया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य न केवल बौद्धिक विकास, बल्कि चरित्र निर्माण भी होना चाहिए। वे मानते थे कि एक अच्छे नागरिक की परिभाषा में न केवल ज्ञान बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और भारतीयता के प्रति आस्था भी शामिल होनी चाहिए। उन्होंने ''नैतिकता, समाज की सेवा और देशभक्ति'' को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना। उनका आदर्श यह था कि भारत में शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसा व्यक्ति तैयार करना है जो अपने समाज और राष्ट्र के प्रति निष्ठावान हो।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचार

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने शिक्षा को समाज में समानता और न्याय स्थापित करने का सबसे प्रभावी उपकरण माना। उनका कहना था कि ''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं''। उन्होंने विशेष रूप से समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को शिक्षा के माध्यम से उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और समाज में उन्हें बराबरी का स्थान दिलाने का कार्य किया। डॉ. आंबेडकर के अनुसार, शिक्षा के माध्यम से ही समाज में व्याप्त जातिवाद, भेदभाव और असमानता को समाप्त किया जा सकता है। उनकी यह धारणा थी कि ''शिक्षा से ही सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समानता संभव है''।

रवींद्रनाथ ठाकुर के विचार

रवींद्रनाथ ठाकुर ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को मानवीयता, सौंदर्यबोध, और स्वच्छंदता से जोड़ा। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना का संचय नहीं, बल्कि उसे जीवन के हर पहलू से जोड़ने का होना चाहिए। उनका कहना था, ''शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के भीतर छिपी हुई रचनात्मकता और मनुष्यत्व को जागृत करना है''। उन्होंने भारतीय गुरुकुल परंपरा को प्रोत्साहित किया, जहाँ शिक्षा न केवल पाठ्यक्रम बल्कि जीवन के अनुभवों से मिलकर हो। ठाकुर के अनुसार, शिक्षा को दुनिया के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करना चाहिए, जो स्वतंत्र विचार और सामाजिक विकास की ओर अग्रसर हो।

पंजाबराव देशमुख के विचार

पंजाबराव देशमुख ने भारतीय ग्रामीण शिक्षा पर विशेष ध्यान केंद्रित किया। उनका मानना था कि ''शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का सबसे शक्तिशाली उपकरण है''। उन्होंने हमेशा यह कहा कि भारत का वास्तविक विकास गाँवों और किसानों की शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। पंजाबराव देशमुख के अनुसार, शिक्षा को न केवल बौद्धिक दृष्टिकोण से, बल्कि समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता और सामाजिक समस्याओं को दूर करने के लिए एक उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए। उन्होंने किसानों और मजदूरों के लिए विशेष रूप से शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया ताकि वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझ सकें और राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकें।

शिक्षा के साथ राष्ट्रीय एकता : एक मजबूत राष्ट्र की नींव

आज के समय में शिक्षा का उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत विकास है, बल्कि यह एक ऐसे सशक्त और समृद्ध समाज की स्थापना करना भी है, जो विविधताओं में एकता और समानता को महत्त्व देता है। राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक को एक समान और समावेशी शिक्षा प्राप्त हो, जो उसे उसकी संस्कृति, इतिहास, और समाज में अपनी जिम्मेदारी समझने के लिए प्रेरित करे।

यह कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षा राष्ट्र की एकता और शक्ति का मुख्य स्तंभ है। जब हम प्रत्येक नागरिक को समान शिक्षा का अवसर प्रदान करते हैं, तो हम एक ऐसा समाज बना रहे हैं जो सशक्त, समृद्ध और स्थिर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य के अनुरूप, शिक्षा न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि यह सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को भी पोषित करती है। अगर हम चाहते हैं कि भारत सशक्त और विश्वगुरु बने, तो हमें शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सशक्त बनाना होगा। शिक्षा ही वह माध्यम है, जो हमारे समाज को जोड़ता है, राष्ट्र को मजबूती प्रदान करता है और समग्र विकास की दिशा में आगे बढ़ाता है।

1. शिक्षा का उद्देश्य : व्यक्तिगत और सामाजिक विकास

शिक्षा का उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत स्तर पर ज्ञान और कौशल प्रदान करना है, बल्कि यह समाज के प्रत्येक सदस्य को सशक्त बनाने का भी माध्यम है। शिक्षा से प्राप्त ज्ञान से व्यक्ति अपने जीवन में बेहतरी की ओर कदम बढ़ाता है, और साथ ही समाज में अपनी भूमिका को समझते हुए, एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। ''शिक्षा स्वतंत्रता का स्वर्णद्वार खोलने की कुंजी है।'' – जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर के इस कथन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि यह राष्ट्र की प्रगति में भी योगदान देती है।

2. सामाजिक समरसता और संस्कृति का संरक्षण

शिक्षा का एक अन्य महत्त्वपूर्ण उद्देश्य समाज में समरसता और एकता को बढ़ावा देना है। एकता और विविधता के इस देश में, शिक्षा समाज के विभिन्न समूहों को एक-दूसरे के प्रति सम्मान, सहिष्णुता और समझ सिखाती है। यह व्यक्तियों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर और पारंपरिक मूल्यों को समझने में मदद करती है, साथ ही नए विचारों और दृष्टिकोणों के प्रति भी खुला दृष्टिकोण उत्पन्न करती है। ''शिक्षा जीवन के लिए तैयारी नहीं है; शिक्षा स्वयं जीवन है।'' – जॉन ड्यूई का यह उद्धरण यह दर्शाता है कि शिक्षा केवल शिक्षा के रूप में नहीं, बल्कि जीवन को समझने, स्वीकार करने और जीने का तरीका है।

3. राष्ट्रीय पहचान और साझा मूल्य

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान और साझा मूल्यों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। एक साझा राष्ट्रीय पहचान, एकता की भावना को बढ़ावा देती है और समाज को जोड़ने का काम करती है। राष्ट्रीय एकता तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक अपनी राष्ट्रीयता, संस्कृति और धरोहर से जुड़ा महसूस करे। ''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते हैं।'' – नेल्सन मंडेला के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती है, जो सभी नागरिकों के बीच समानता और समरसता का संदेश फैलाती है।

4. सामुदायिक और नागरिक जिम्मेदारी

शिक्षा केवल ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नागरिक जिम्मेदारी को भी मजबूत करती है। जब लोग शिक्षित होते हैं, तो वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक होते हैं और समाज में सक्रिय रूप से योगदान करते हैं। यह लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने, सरकार से जिम्मेदारी की उम्मीद करने और सामुदायिक सेवा में शामिल होने के लिए प्रेरित करता है। 'शिक्षा से ही व्यक्ति स्वतंत्र होता है।' – इस विचार को व्यक्त करते हुए, ज. कृष्णमूर्ति ने यह बताया कि शिक्षा लोकतंत्र में भागीदारी और सक्रिय नागरिकता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

5. समानता और सामाजिक न्याय

शिक्षा समानता के एक महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करती है। यह समाज के हर वर्ग तक पहुँचने का अवसर प्रदान करती है, जिससे हर व्यक्ति को बराबरी का अवसर मिलता है। शिक्षा से उत्पन्न समानता राष्ट्र की स्थिरता को बढ़ावा देती है और सामाजिक शांति बनाए रखती है। ''ज्ञान में निवेश सबसे अच्छा ब्याज देता है।'' – बेंजामिन फ्रैंकलिन का यह उद्धरण इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि शिक्षा का निवेश समाज को मजबूत और न्यायपूर्ण बनाता है।

6. राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका

शिक्षित समाज ही एक प्रगतिशील समाज है। जब लोग शिक्षित होते हैं, तो वे न केवल अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि में भी योगदान करते हैं। शिक्षा से सशक्त व्यक्ति नई सोच, नवाचार और उत्पादकता को बढ़ावा देते हैं, जो राष्ट्र की समृद्धि में सहायक होते हैं। 'शिक्षा हिंसा के लिए एक टीका है।' – एडवर्ड केनेली का यह कथन इस बात को रेखांकित करता है कि शिक्षा सामाजिक असहमति और हिंसा को कम करने में मदद करती है, और इसके द्वारा राष्ट्र की समृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता है।

शिक्षा के साथ एकता की दिशा

आखिरकार, यह कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षा राष्ट्र की एकता और शक्ति का मुख्य स्तंभ है। जब हम प्रत्येक नागरिक को समान शिक्षा का अवसर प्रदान करते हैं, तो हम एक ऐसा समाज बना रहे हैं जो सशक्त, समृद्ध और स्थिर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य के अनुरूप, शिक्षा न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि यह सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को भी पोषित करती है। अगर हम चाहते हैं कि भारत एक सशक्त और विश्वगुरु बने, तो हमें शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सशक्त बनाना होगा। शिक्षा ही वह माध्यम है, जो हमारे समाज को जोड़ता है, राष्ट्र को मजबूती प्रदान करता है और समग्र विकास की दिशा में आगे बढ़ाता है।

अंततः यह कहना सही होगा कि शिक्षा न केवल व्यक्तिगत जीवन को सशक्त बनाती है, बल्कि यह पूरे राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक सशक्त, समान और समावेशी ढाँचे में बदलने के लिए कई सुधारों की आवश्यकता है, ताकि हम प्रत्येक नागरिक को उसके अधिकार, अवसर और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक कर सकें।

यदि भारत को सचमुच विश्वगुरु बनना है, तो हमें शिक्षा को एक ऐसा उपकरण बनाना होगा जो ना केवल बौद्धिक, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक रूप से भी सशक्त बनाए। यह तभी संभव है जब हम भारतीय समाज के हर वर्ग, हर समुदाय और हर व्यक्ति को समान शिक्षा के अवसर प्रदान करें। ❑

राष्ट्रीय एकता के संवैधानिक आधार

डॉ. रघुनन्दन शर्मा
वरिष्ठ अध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टाडावास,
जालसू, राजस्थान

वैदिक काल से लेकर आधुनिक भारत तक एकता और सामाजिक सद्भाव की अवधारणा हमारी संस्कृति का मूल मंत्र रही है। वेदों में इसका स्पष्ट प्रतिबिंब मिलता है : प्राचीन संस्कृत के श्लोक इस भावना को बखूबी व्यक्त करते हैं –

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

अर्थात् छोटी सोच वाले लोग 'यह मेरा है, यह पराया है' ऐसा सोचते हैं परंतु महान व्यक्ति पूरी पृथ्वी को एक परिवार मानते हैं।

यह श्लोक राष्ट्रीय एकता की नींव रखता है, जो विभिन्नताओं के बावजूद सार्वभौमिक मानवता में विश्वास करता है।

वसुधैव कुटुम्बकम्

यह प्राचीन श्लोक पूरी मानवता को एक परिवार के रूप में देखने की महान अवधारणा को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि पूरी धरती ही एक परिवार है, जो विविधता में एकता के हमारे संवैधानिक आदर्श का मूल स्रोत है। ऋग्वेद का एक अन्य महत्वपूर्ण श्लोक कहता है –

आ ते विश्वे सम् आयंतु आर्याः

(सभी आर्य लोग एक साथ आएं और मिलजुल कर रहें)

भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक संविधान है, जो एक जटिल और विविधतापूर्ण देश को एक साथ बांधने का अनूठा प्रयास करता है। यह न केवल एक कानूनी दस्तावेज है, बल्कि राष्ट्रीय एकता के लिए एक महत्त्वपूर्ण रोडमैप भी है। जब हम भारतीय संविधान को देखते हैं, तो यह केवल एक कागज का दस्तावेज नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवंत कहानी है जो विविधता में एकता के महान सपने को संजोए हुए है। यह एक ऐसी यात्रा है जो अनेकता में एकता के भारतीय आदर्श को प्रतिबिंबित करती है, जहाँ असंख्य भाषाएँ, संस्कृतियाँ, धर्म और परंपराएँ एक साथ मिलकर एक अद्भुत राष्ट्र का निर्माण करती हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत एक ऐसे महासागर की भाँति था जिसमें अनेक नदियाँ अलग-अलग दिशाओं में बह रही थीं। कहीं जातीय तनाव थे, कहीं धार्मिक विभेद, तो कहीं क्षेत्रीय असंतोष। ऐसी जटिल परिस्थितियों में संविधान निर्माताओं ने एक ऐसे दस्तावेज की कल्पना की जो न केवल कानून हो, बल्कि एक ऐसा मार्गदर्शक भी जो विविधता को सम्मान देते हुए राष्ट्रीय एकता को मजबूत करे।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने संविधान को एक ऐसी नींव के रूप में देखा जिस पर समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की इमारत खड़ी की जा सके। उनका मानना था कि राष्ट्रीय एकता केवल कानूनी दस्तावेजों से नहीं, बल्कि लोगों के हृदय में बसने वाली भावना से निर्मित होती है। संविधान ने समानता के सिद्धांत को एक ऐसे चिराग की तरह स्थापित किया जो

समाज के हर कोने में प्रकाश फैलाता है।

चाहे वह जन्म के आधार पर भेदभाव हो या लिंग, जाति, धर्म के आधार पर होने वाला असमानता का व्यवहार संविधान ने इन सबके लिए एक स्पष्ट संदेश दिया कि भारत में हर नागरिक समान है।

भारतीय संविधान ने एक ऐसी संघीय व्यवस्था का निर्माण किया जहाँ राज्यों को पर्याप्त स्वायत्तता दी गई, लेकिन साथ ही राष्ट्रीय एकता के मूल्य को भी संरक्षित रखा गया। यह एक ऐसा संतुलन था जो विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों को सम्मान देता हुआ एक मजबूत राष्ट्र की कल्पना को साकार करता था। नि:संदेह, यह मार्ग सुगम नहीं था। सांप्रदायिक तनाव, जातीय विभेद, आर्थिक असमानताएँ ये चुनौतियाँ लगातार राष्ट्रीय एकता पर प्रहार करती रहीं। लेकिन संविधान ने हमेशा एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जो समावेश और सामाजिक न्याय पर आधारित था।

राष्ट्रीय एकता के संवैधानिक आधार :

संविधान की प्रस्तावना में 'सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय' सुनिश्चित करने का वादा किया गया है, जिससे एक समान और एकजुट समाज की कल्पना की जाती है। अनुच्छेद 1 में कहा गया है कि भारत एक संघीय गणराज्य है, जिसमें राज्य और केंद्र के बीच एकता और अखंडता को सुनिश्चित किया गया है । संविधान के भाग - 3 में वर्णित मौलिक अधिकार एवं संविधान के भाग-4 क में वर्णित मौलिक कर्त्तव्य राष्ट्रीय एकता की नींव हैं। समानता का अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता, शोषण के विरुद्ध अधिकार और सांस्कृतिक अधिकार सभी नागरिकों को समान अवसर और गरिमा प्रदान करते हैं।

राज्य के नीति निर्देशक तत्त्व :

सामाजिक न्याय और समानता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्य को निर्देश देते हैं। आर्थिक असमानताओं को कम करना, श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करना और शिक्षा के अवसर प्रदान करना इनके प्रमुख उद्देश्य हैं। भारतीय संविधान एक ऐसी संघीय व्यवस्था प्रदान करता है जो राज्यों को पर्याप्त स्वायत्तता देता है। यह विभिन्न क्षेत्रीय और भाषाई समुदायों की संस्कृतियों और परंपराओं को संरक्षण प्रदान करता है। भारतीय संविधान ने जाति व्यवस्था के विरुद्ध एक मजबूत संवैधानिक आधार तैयार किया। अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता को समाप्त करता है और सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, विवाह संबंधी कानून और सामाजिक न्याय के प्रावधान जातीय बंधनों को तोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संविधान महिलाओं को पूर्ण समानता और अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद 14 और 15 लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध संरक्षण देते हैं। 73वाँ और 74वाँ संविधान संशोधन महिलाओं को पंचायत और नगरपालिका स्तर पर 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करता है, वही 106 वाँ संविधान संशोधन इसे 50 प्रतिशत तक लेकर जाता है जो मातृशक्ति के राजनीतिक सशक्तिकरण में महत्त्वपूर्ण कदम है।

पंचम् और षष्ठ अनुसूची में आदिवासी समुदायों के अधिकारों और संस्कृतियों की रक्षा के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। ये प्रावधान आदिवासी समुदायों को उनकी परंपराओं और संस्कृति को संरक्षित रखने में सहायता करते हैं। भारतीय संविधान विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक संविधानों में से एक है। यह विविधता में एकता के मॉडल के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा जाता है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ भारतीय लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों की सराहना करती हैं।

(अनुच्छेद 44) संविधान सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता का प्रस्ताव करता है, जिससे समाज में समानता और एकता बढ़ती है। संविधान के अनुच्छेद 51 में अंतरराष्ट्रीय शांति और सहयोग के लिए प्रावधान किए गए हैं। यह भारत की विदेश नीति के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत प्रदान करता है, वर्तमान में डिजिटल प्लेटफॉर्म राष्ट्रीय एकता के नए माध्यम बन गए हैं। सरकार की डिजिटल इंडिया पहल संविधान के मूल्यों को डिजिटल युग में आगे बढ़ाने का प्रयास है। संविधान के अनुच्छेद 48 और 51 (ह) पर्यावरण संरक्षण के लिए नागरिकों और राज्य की जिम्मेदारी निर्धारित करते हैं।

भारतीय संविधान केवल राजनीतिक एकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण को भी महत्त्व देता है। अनुच्छेद 29 और 30 सांस्कृतिक और शैक्षणिक अधिकारों की गारंटी देते हैं। अल्पसंख्यक समुदायों को अपनी भाषा, संस्कृति और शिक्षा संस्थानों को संरक्षित करने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया है। भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत पर आधारित है।

भारतीय संविधान में राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए अनेक तत्त्वों का समावेश किया गया है। ये तत्त्व भारतीय समाज की विविधताओं को देखते हुए विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और क्षेत्रों को एकजुट करने का कार्य करते हैं। संविधान ने न केवल समानता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए प्रावधान किए हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि सभी भारतीय नागरिकों को उनके अधिकार और कर्तव्यों की जानकारी हो, जिससे देश में सामूहिक रूप से राष्ट्रीय एकता और अखंडता बनी रहे। वेदों और उपनिषदों का समान महत्त्व, सभी धर्मों का सम्मान, सार्वभौमिक त्यौहार, गुरु शिष्य परंपरा, लोक कला और शिल्प, आतिथ्य सत्कार संस्कार और जीवन के आदर्श, राष्ट्रीय आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य, पारंपरिक भारतीय संगीत आध्यात्मिकता और ध्यान योग और भारतीय स्वास्थ्य पद्धतियाँ, समानता का आदर्श, भारतीय संस्कृति में प्रकृति को देवी के रूप में पूजा ये सभी तत्त्व भारतीयों को एक साथ जोड़ने और पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रेरित करते हैं, भारतीय संस्कृति में एकता और समानता का संदेश देते हैं भारतीयता की पहचान को मजबूत करते हैं।

अनुच्छेद 25-28 धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक समानता की गारंटी देते हैं। कोई भी व्यक्ति धार्मिक आधार पर भेदभाव का शिकार नहीं हो सकता। यह प्रावधान विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सौहार्द और सम्मान को बढ़ावा देता है।

भारत में 22 मान्यता प्राप्त आधिकारिक भाषाएँ हैं और संविधान इन सभी भाषाओं के सम्मान और संरक्षण की गारंटी देता है। आठवीं अनुसूची में विभिन्न भाषाओं को समान महत्त्व दिया गया है, जो दर्शाता है कि राष्ट्रीय एकता का अर्थ एकरूपता नहीं बल्कि विविधता में सामंजस्य है। अनुच्छेद 226 उच्च न्यायालयों को संविधान के तहत अपने अधिकारों को लागू करने और राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने का अधिकार है। भारतीय न्यायपालिका स्वतंत्र और निष्पक्ष है, जो राष्ट्रीय एकता और नागरिक अधिकारों की रक्षा करती है।

भारत का संविधान संघीय ढाँचे में लोकसभा और राज्यसभा का गठन करता है, जिससे सभी राज्यों और क्षेत्रीय समुदायों को एक समान प्रतिनिधित्व मिलता है। राज्य सभा में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करता है, जिससे भारत की संघीय संरचना में एकता बनी रहती है। संविधान ने सभी वयस्क नागरिकों को मतदान का समान अधिकार दिया है, जिससे हर नागरिक की आवाज को सुना जाता है और समानता की भावना मजबूत होती है।

केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय और संतुलन बनाए रखने के लिए विभिन्न शक्तियों और कर्तव्यों का वितरण किया गया है। संविधान का अनुच्छेद 255 के प्रावधान संघीय ढाँचे में संतुलन बनाए रखने के लिए केंद्र और राज्यों के बीच सत्ता और जिम्मेदारियों का वितरण करते हैं, जिससे राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होती है।

संविधान के अनुच्छेद 323 लोक सेवाओं का आयोग न्यायिक समीक्षा का अधिकार (अनुच्छेद 343-351) संविधान भारतीय भाषाओं के बीच समानता को प्रोत्साहित करता है, साथ ही हिंदी को सरकारी भाषा के रूप में स्थापित करता है, जिससे भाषाई एकता को बल मिलता है।

संविधान ने आर्थिक असमानताओं को कम करने के लिए कई उपाय किए हैं, जैसे आरक्षण नीति, ग्रामीण विकास कार्यक्रम और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ। हालाँकि, ये चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। विभिन्न राज्यों के बीच आर्थिक और सामाजिक विकास में असमानताएँ राष्ट्रीय एकता के लिए एक बड़ी चुनौती हैं। वित्त आयोग और योजना आयोग इन असमानताओं को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। पाठ्यक्रमों में सांस्कृतिक विविधता, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया जाना चाहिए। युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय एकता के मूल्यों से जोड़ना आवश्यक है।

भारतीय संविधान में राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए अनेक तत्त्वों का समावेश किया गया है। ये तत्त्व भारतीय समाज की विविधताओं को देखते हुए विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और क्षेत्रों को एकजुट करने का कार्य करते हैं। संविधान ने न केवल समानता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए प्रावधान किए हैं, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि सभी भारतीय नागरिकों को उनके अधिकार और कर्तव्यों की जानकारी हो, जिससे देश में सामूहिक रूप से राष्ट्रीय एकता और अखंडता बनी रहे। वेदों और उपनिषदों का समान महत्व, सभी धर्मों का सम्मान, सार्वभौमिक त्योहार, गुरु शिष्य परंपरा, लोक कला और शिल्प, आतिथ्य सत्कार संस्कार और जीवन के आदर्श, राष्ट्रीय आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य, पारंपरिक भारतीय संगीत आध्यात्मिकता और ध्यान योग और भारतीय स्वास्थ्य पद्धतियाँ, समानता का आदर्श, भारतीय संस्कृति में प्रकृति को देवी के रूप में पूजा ये सभी तत्त्व भारतीयों को एक साथ जोड़ने और पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रेरित करते हैं, भारतीय संस्कृति में एकता और समानता का संदेश देते हैं भारतीयता की पहचान को मजबूत करते हैं।

भारतीय संविधान यह केवल एक दस्तावेज नहीं, बल्कि एक जीवंत काव्य है जो विविधता के रंगों को एकता में पिरोता है। हर अनुच्छेद एक ऐसी धुन है जो कहती है - हम एक हैं, हम अटूट हैं। ❑

महर्षि अरविन्द ने भारतीय वैदिक परम्परा को 'आदर्श दिव्य जीवन' एवं 'मानवीय एकता का आदर्श' रूप में स्पष्ट किया है। आपके कथनानुसार मनुष्य को आत्म–दमन तथा आत्म उच्छेदन के स्थान पर अपने अन्तःकरण में ही अपनी पूर्णता प्राप्त करना सीखना चाहिए। यह भारतीय ज्ञान परम्परा की सशक्त अवधारणा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा

डॉ. चेतना उपाध्याय
वरिष्ठ व्याख्याता,
जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर (राज.)

संगच्छध्वं सवंदध्वं
स वो मनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे,
सज्जानाना उपासते ।।

(ऋग्वेद 10.191.2)

अर्थात् साथ चलने, एक स्वर में बोलने और एक दूसरे के मन को जानने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने का सामर्थ्य से युक्त हो सकता है। जो स्वयं के लिये बेहतर वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य की संकल्पना करने वाले होते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है। जिसमें ज्ञान–विज्ञान, लौकिक पारलौकिक, कर्म धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है।

उक्त अवधारणा इस बात पर आधारित है कि ज्ञान विज्ञान और जीवन दर्शन अनुभव, अवलोकन प्रयोग और कठोर विश्लेषण से विकसित होते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल स्तंभ वैदिक साहित्य व उपनिषद हैं। चरक, सुश्रुत, आर्यभटट्, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, बृह्मगुप्त, चाणक्य, पाणिनि, पंतजलि, मैत्रेयी, गार्गी जैसे विद्वान तथा विदुषी इसके प्रमुख संवाहक रहे हैं। इसके केंद्र में प्रकृति, पर्यावरण और मनुष्य सदैव रहे हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में स्वतंत्रता समानता, बंधुत्व, और विश्व शांति के सिद्धान्तों को अपनाया गया है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वेसन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चित् दुःख भागभवेत।।

अर्थात् संसार में सभी सुखी हों, सभी नीरोग रहें। सभी अच्छी घटनाओं को देखने वाले साक्षी रहें। कभी किसी को दुःख का भागी न बनना पड़े।

यह श्लोक बृहदारण्यक उपनिषद् से लिया गया है, प्रारम्भिक भारतीय ज्ञान परम्परा को उपनिषदों के माध्यम से ही जाना व समझा जाता है क्योंकि उस समय ज्ञान वाचिक परम्परा में ही शनैः शनैः विस्तार प्राप्त करता था। शिष्य गुरु के समीप बैठ गुरुवाणी श्रवण के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते थे। फिर उसे गुरु के समक्ष प्रस्तुत कर विस्तारित करने की आज्ञा प्राप्त कर विस्तारित करते थे। जिन्हे उपनिषद् कहा जाता है। उपनिषद् अर्थात् गुरु के समीप बैठ श्रवण किया गया ज्ञान।

उपनिषद् को वेदान्त भी कहा जाता है। वेदान्त अर्थात् वेदों का अन्त। दरअसल वेदों के अध्ययन के दौरान उपनिषद् का क्रम सबसे अंत में आता है। सबसे पहले संहिता पढ़ाई जाती है । उसके बाद ब्राह्मण आते हैं। इसके बाद आरण्यक और सबसे अंत में उपनिषद्। उपनिषदों की गणना व काल का इतिहास कुल ठीक ठीक उपलब्ध न हो सका है। इस विषय पर विद्वानों के पृथक पृथक मत हैं।

आदि गुरु शंकराचार्य जी के समय 108 उपनिषद् का जिक्र मिलता है। इनमें से 13 उपनिषद् मुख्य माने गए हैं। शंकराचार्य जी ने इनमें से 10 का भाष्य लिखा था। ये थे ईश, ऐतरेय, कठ, केन, छांदोग्य, प्रश्न, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक, मांडूक्य और मुंडक।

108 उपनिषदों को कई तरह से बाँटा गया है। इसमें सबसे प्रचलित वर्गीकरण वेदों से जोड़ कर किया गया है। ऋग्वेदीय

उपनिषदों की संख्या 10 बताई जाती है। यजुर्वेद से जुड़े हुए उपनिषदों को दो भागों में बाँटा गया है। पहला है शुक्ल यजुर्वेदीय जिसके तहत 32 उपनिषद् रखे गए हैं। सामवेद से जुड़े 16 उपनिषद् है। और अथर्ववेद से जुड़े कुल 31 उपनिषद् हैं। इनमें से कुछ गद्य में और कुछ पद्य में हैं। और सभी ने 'मनुर्भव' की बात की है। अर्थात् एक जिम्मेदार मानव के दायित्वों और अधिकारों की एक निश्चित व्याख्या की गई है।

'वयं स्याम पतयो रयीणाम्'

यह वेद मन्त्र सर्व सुविधाओं ऐश्वर्यों से सुसम्पन्न समाज की स्थापना करता है। बस मूल बात इतनी है कि भारतीय ऋषि यह व्यवस्था केवल स्वयं के लिए नहीं वरन् वर्तमान और भविष्य की सभी पीढ़ियों के लिए चाहते थे। अर्थात् भारतीय ज्ञान परम्परा में स्वार्थ की जगह परमार्थ का विशिष्ट स्थान रहा है। हम चाहे किसी भी श्लोक को, सूक्ति को ध्यान से देखें समझें तो सहज ही यह विचारधारा स्पष्ट हो जाती है।

'भारतस्य प्रतिष्टे द्वे, संस्कृतं संस्कृतिस्तथा' अर्थात् प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान को गौरवमयी परम्परा समस्त जगत को आलोकित करने वाली है संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान की महती श्रृंखला है जो वर्तमान वैज्ञानिक जगत के लिए कौतुहल का विषय है। क्योंकि आर्षप्रणीत सिद्धातों व सूत्रों को समझने के लिए उन्हीं के अनुरुप चिन्तन-मनन के लिए अग्रसर होना होगा। भारतीय ज्ञान परम्परा में जीवन और प्रकृति का एक सहज और सरल रूप विकसित किया गया था। पर्यावरण संरक्षण हेतु अथर्ववेद में अत्यंत स्पष्टता के साथ जल, वायु, वनस्पति को औषधि के रूप में वर्णित किया गया है। **'आपो वाता औषधयः'** (अथर्ववेद 18-1-17) अथर्ववेद में पर्यावरण के तीन संघटक तत्त्वों की चर्चा की गई जो कि जल, वायु और औषधियाँ (वनस्पतियाँ) हैं। जीवन रक्षा के लिए इन तीनों ही तत्त्वों की उपादेयता सर्वाधिक है। जबकि वर्तमान विज्ञान, जल और वायु को तो पर्यावरण में सम्मिलित करता है। किंतु वनस्पति/औषधियों को नहीं। जो कि उसकी त्रुटि को ही रेखांकित करता है। पर्यावरण को परिधि शब्द से परिभाषित करते हुए अथर्ववेद में कहा गया है -

'सर्वा वै तत्र जीवति,
गौरश्वः पुरुषः पशुः।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते,
परिधिजविनायकम्'।।

(अथर्ववेद 8.2.25)

समस्त प्राणियों के सुखमय जीवन हेतु पूर्ण शुद्ध (ब्रह्म) पर्यावरण (परिधि) आवश्यक है। पृथ्वी संरक्षण के भाव स्वयं ही प्रत्येक हृदय में स्थापित हो जाएँ अतः **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'।।**

(अथर्ववेद 12-1-12)

कहकर पृथ्वी को माँ और स्वयं को उसकी सन्तान के रूप में उद्घोषित किया गया है। जो कि सनातनी ज्ञान परम्परा की सशक्तता को प्रदर्शित करता है। हम भारतीय पृथ्वी को अपनी मां मानते हैं तो हम पुत्रवत अपने कर्तव्यों का पालन भी करें। एक छोटे से छोटे कर्तव्य को भी बड़ी संजीदगी से दर्शाया गया है, समझाया गया है -

यत्ते भूमे विखनामि, क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि, मा ते हृदयम पिर्पम्।।

(अथर्ववेद 12.1.35)

अर्थात् हम पृथ्वी के जिस भाग को खोदते हैं, उसे शीघ्र फिर भरें। किसी भी अवस्था में पृथ्वी के हृदय और मर्मस्थलों को क्षति न पहुँचाए।

महर्षि मनु, वेदों को समस्त ज्ञान का आगार कहते हैं और बड़ी ही सहजता, तार्किकता और दृढ़ता के साथ वेदोक्त कार्यों को धर्म और इन वेदों में निषिद्ध किए गए कार्यों को अधर्म कहते हैं।

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो
मानुना परिकीर्तितः
स सर्वोऽभिहितो वेदे।
सर्वज्ञानमयो हिसः।।

(मनुस्मृति महर्षि मनु 2.7)

भारतीय ज्ञान परम्परा में बड़ी ही स्पष्टता के साथ बताया गया है कि धारण करने योग्य मूल्य ही धर्म है। और इन धारण योग्य मूल्यों का आचरण करना ही मानव धर्म है। मनुस्मृति में स्पष्ट किया गया है कि-

एतंद्रेश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन,
पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

(मनुस्मृति-महर्षि मनु 2.20)

महर्षि मनु अपने उक्त कथन में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि भारतीय ज्ञान विज्ञान से संयुक्त व्यक्तित्त्व, समस्त विश्व के लिए चरित्र का सच्चा शिक्षक हो सकता है क्योंकि भारतीय ज्ञान की सनातन

परम्पराओं में चारित्रिक सुदृढ़ता सहज भाव से शामिल है। भारतीय संस्कृति अपने ज्ञान विज्ञान की पराकाष्टा को प्राप्त होने के उपरांत भी प्राकृतिक सामंजस्य का निदर्शन कराने वाली रही।

चारों वेद और उनके समस्त अंग-उपांग एवं उनके सिद्धांतों को विस्तार देने वाले अनेक शास्त्रादि हमें भव्य ज्ञान-विज्ञान का दर्शन कराते हैं। स्थूल से सूक्ष्मता का अभिज्ञान कराते हैं भले ही उनके प्रयोग के तरीके वर्तमान तरीकों से भिन्न थे। उसके बावजूद भी वह शास्त्र सम्मत् ज्ञान विज्ञान, वर्तमान अंग्रेजियत भरे विज्ञान को चुनौती देने वाला रहा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा का मूल है भारतीय संस्कृति, यह जीवन आधार मानी गई है और संस्कृत इससे जुड़ने का सशक्त माध्यम है। इन दोनों की पारस्परिक सुदृढ़ता ही भारत को (भारत) 'भा' अर्थात् ज्ञान रूपी प्रकाश में 'रत' रहते हुए लगातार अग्रसर होने वाली बनाती है।

'जहाँ भा में रत ही छुपा हुआ है, वहाँ नामकरण ही भारत हुआ है। बड़ी लुभाती ज्ञानी गंगा, कंण कंण महकाती ज्ञानी गंगा।'

यहाँ उक्त परम्परा के तहत उच्च स्तरीय ज्ञान-मीमांसा विकसित हुई है। ज्ञान मीमांसा अर्थात् ज्ञान का स्वरूप तथा ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया। ज्ञान, प्रकाश समान माना गया है। जिसके आलोक में विभिन्न वस्तुओं तथा जीवन के वास्तविक स्वरूप को जाना व समझा जा सकता है। यह विद्यमान वस्तु को प्रकाशित करने वाला है। ज्ञान के पाँच भेद स्वीकारे गए हैं।

1. मति अर्थात् इन्द्रियों एवं मन से होने वाला ज्ञान।

2. श्रुत अर्थात् शास्त्रों के माध्यम से होने वाला ज्ञान।

3. अवधि अर्थात् दूरवर्ती एवं व्यवधान वाले पदार्थों का होने वाला ज्ञान।

4. मनः पर्यय अर्थात् अन्यों के मनोभावों का प्रत्यक्षीकरण।

5. केवल ज्ञान अर्थात् विश्व के सभी पदार्थों को एक साथ जान सकने में सक्षम सर्वज्ञ को होने वाला ज्ञान।

ज्ञान प्राप्ति की इस प्रक्रिया के क्रम की पाँच अवस्थाएँ हैं।

1. दर्शन अवस्था - कुछ हैं जो प्रकट हो रहा है सामान्य जानकारियाँ।

2. अर्थावग्रह अवस्था - इन्द्रियों द्वारा वस्तु के ग्रहण की अवस्था - इसके दो रूप माने जाते हैं।

(अ) व्यञ्जनावग्रह अवस्था - जिसमें चार इन्द्रियों एवं वस्तु का सम्पर्क होता है।

(ब) अर्थावग्रह अवस्था - जिसमें वस्तु का प्रतिभास होता है।

3. ईहा अवस्था ।

4. अवाय अवस्था।

5. धारणा अवस्था - कुछ विशिष्ट जानने की इच्छा वाली अवस्था विशेष के निश्चय वाली अवस्था। ज्ञान के संस्कार के रूप में परिणत होने वाली अवस्था।

उक्त प्रक्रिया के माध्यम से हमने पाया कि भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा ठोस वैज्ञानिक धरातल साथ लिए चरणबद्ध स्वरूप में सम्पादित होती है उक्त आधार पर स्वयं को जानना, सत्य को / यथार्थ की जानकारियाँ समझना ही ज्ञान है। जीवन जीने की राह स्पष्ट होना, जीवन कुशलता पूर्वक जी पाने की समझ बूझ प्राप्त हो पाना ही ज्ञान है। इसे वैश्विक स्तर पर मानवीय संवेदनाओं के प्रति गहरी आस्थाओं के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए महात्मा बुद्ध ने कहा है कि - **'अप्प दीपो भव'** अर्थात् अपने जीवन को प्रकाशमान करने वाले दीपक स्वयं बनो। स्वयं के उद्धारक स्वयं बनो।

ज्ञान संबधी संकल्पनाओं में जीवन की व्यावहारिकता का ही विशिष्ट स्थान है। बुद्ध उपदेशों के त्रिपिटक साहित्य की माध्यमिककारिका में बताया गया है कि-

द्वे सत्ये समुपाश्रित बुद्धानां धर्मदेशना
लेकससंविति सत्यं च परमार्थना।

अर्थात् शिक्षा/ज्ञान के दो रूप उपलब्ध होते हैं।

1. आध्यात्मिक ज्ञान - आध्यात्मिक दृष्टि से ज्ञान को निर्वाण अर्थात् 'आनंद की अवस्था' की प्राप्ति के मार्ग के रूप में देखा गया है।

2. लौकिक ज्ञान - लौकिक दृष्टि से ज्ञान को 'समाज में नम्रता पूर्वक करूण एवं उदार चरित्र से परिपूर्ण' जीवन जीने वाले नागरिक के रूप में देखा गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा ने सदैव अपनी संस्कृति, इतिहास और विविधता की समृद्ध छवि के साथ हमेशा ही शिक्षा के साथ मानवीय मूल्यों को महत्त्व दिया है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की अवधारणा देकर भारत ने न केवल पूरे विश्व को एक पारिवारिक सूत्र में पिरोने की अनूठी संस्कृति और मूल्य चेतना विकसित की है। साथ ही भौगोलिक रूप से खंडित एवं विभाजित दुनिया का उच्चतम मानवीय मूल्यों के साथ मनुष्य के सर्वांगीण विकास की बहुआयामी ज्ञान प्रणाली से भी परिचय कराया है। समावेशिता और सांस्कृतिक विरासत के लोकाचार में निहित भारतीय ज्ञान परम्परा वस्तुतः समाज में सार्थक योगदान देने में सक्षम युवाओं और पूर्ण व्यक्तियों को पोषित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। जैसे जैसे हम इस प्रणाली को समझते हुए इसकी गहराइयों में उतरते हैं। हम ज्ञान की एक ऐसी संस्कृति को देखते हैं, जो पारम्परिक मूल्यों अत्याधुनिक तकनीक और दूरदर्शी चिन्तन को एक साथ पिरोने का कार्य करती है।

महर्षि अरविन्द ने भारतीय वैदिक परम्परा को 'आदर्श दिव्य जीवन' एवं 'मानवीय एकता का आदर्श' रूप में स्पष्ट किया है। आपके कथनानुसार मनुष्य को आत्म-दमन तथा आत्म उच्छेदन के स्थान पर अपने अन्तःकरण में ही अपनी पूर्णता प्राप्त करना सीखना चाहिए। यह भारतीय ज्ञान परम्परा की सशक्त अवधारणा है।

स्वामी विवेकानंद जी मानते हैं कि उपनिषद् शक्ति की विशाल खान है। उनमें ऐसी प्रचुर शक्ति विद्यमान है कि वे समस्त संसार को तेजस्वी कर सकते हैं। उपनिषदों का मूलमंत्र है 'मुक्ति' अथवा स्वाधीनता,

दैहिक स्वाधीनता, मानसिक स्वाधीनता, आध्यमिक स्वाधीनता।

इस बात को बड़ी ही सरलता के साथ अनुभूत किया जा सकता है कि प्रकृति द्वारा प्रत्येक प्राणी में कई प्रकार की जन्मजात स्वाभाविक क्षमताएँ भर दी गई हैं। उनका अपना एक शारीरिक गठन है। उनकी अपनी सोचने, समझने की क्षमता व शैली है। उनमें क्रोध, प्रेम ग्लान, लज्जा, हास्य, दया, घृणा इत्यादि अनेकानेक भावनाएँ विद्यामान हैं। जो कि समयानुसार अभिव्यक्त या प्रकट होते रहते हैं। इन विभिन्न भावों के व्यक्त होने के कारण ही मनुष्य को 'व्यक्ति' कहा गया है। और इसी व्यक्ति के तत्व को व्यक्तित्व कहा गया है।

व्यक्तित्व के मूल में 'व्यक्ति' शब्द है। व्यक्ति के मूल में 'व्यक्त' शब्द है। व्यक्त का अर्थ है किसी अदृष्ट (न देखा गया) अनाकलनीय (आकलन न करने योग्य) अचिंत्य (चिंतन में करने योग्य) तत्त्व का दृष्ट, चिन्तनीय आकलनीय प्रकट स्वरूप बृह्म या आत्म तत्त्व अदृष्ट, अस्पर्थ्य, अश्रव्य, अविचार्य, अनाकलनीय तत्त्व है। अर्थात् हम उसे देख, सुन, छू, चख, सूंघ नहीं सकते। उसके स्वरूप को या बुद्धि से जान नहीं सकते। फिर भी वह संपूर्ण सृष्टि उस आत्म तत्त्व का प्रकट अर्थात् व्यक्त रूप है। अत: यह व्यक्ति है। व्यक्ति की भाववाचक संज्ञा व्यक्तित्व है।

हमारी ज्ञान परम्पराओं ने जड़ चेतन सभी का आदर करना एवं उनके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करना सिखाया है। स्वार्थहीनता हमारी ज्ञान परम्परा का एक प्रमुख तत्त्व है। प्रकृति के माध्यम से हमने ये संदेश पाए है। 'नदिया न पिए कभी अपना जल, वृक्ष न खाए अपने फल।'

भारतीय ज्ञान परम्परा 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई' की परम्परा है। 'इदं राष्ट्राय, इदं न मम' की यह परम्परा 'जगहिताय' अर्थात् हमारा सब कुछ संसार के लिए, राष्ट्र हित के लिए है की परम्परा है। 'शिक्षार्थ आइए - सेवार्थ जाइए' इस परम्परा की शिक्षा का संदेश है। इसका उद्घोष वाक्य है कि सभी सुखी व निरोगी हों -

'सर्वे भवन्तु: सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:'

यह चिन्तन ही भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा है जो विभिन्न ग्रंथों, मनीषियों की वाणी के माध्यम से निरन्तर समाज में पोषित व प्रसारित होता रहता है।

धरती पर पाए जाने वाले समस्त प्रणियों में मनुष्य सर्वाधिक व्यक्त होने वाला प्राणी है। यही कारण है उसे व्यक्ति कहा गया है। व्यक्ति की भाववाचक संज्ञा व्यक्तित्व है। अत: ज्ञान/शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास माना गया है। हमारे तैत्तिरीय उपनिषद में इस व्यक्तित्व की पंचकोषीय अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। ताकि हम अपने व्यक्तित्व को भली-भांति समझ सकें। ज्ञान परम्परा के उपनिषद् जीवन के विभिन्न पक्षों अथवा रहस्यों की दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक इत्यादि अनेक प्रकार से व्याख्या करते हैं।

उक्त संदर्भ में तैत्तिरीय उपनिषद् में ब्रह्मान्दवल्ली के द्वितीय अनुवाक में जीवनोत्पत्ति की चर्चा में पंचकोशों की जानकारी प्रदान की गई है। इसके अन्तर्गत मानव विकास के पाँच आयाम बताए गए हैं। इस हेतु सर्वांगीण विकास के 'शरीर, प्राण, मन, बुद्धि, आनंद अर्थात् अध्यात्म के निम्न आयाम सुझाए गए है -

1. अन्नमय कोश, 2. प्राणमय कोश, 3. मनोमय कोश, 4. विज्ञानमय कोश, 5. आनंदमय कोश, शारीरिक विकास, प्राणों का विकास, मानसिक विकास, बौद्धिक विकास,।

आध्यात्मिक विकास

विकास की यह सम्पूर्ण प्रक्रिया मूल रूप में स्थूल से सूक्ष्म की ओर गतिशील होने की प्रक्रिया है। यह गतिशीलता विकास चिह्न है। पंचदशी ग्रन्थ में इसके सार को प्रकट करते हुए कहा गया है -

देहादम्यन्तर: प्राण: प्राणादभ्यन्तरं मन: तत: कर्ता ततो भोक्ता गुहा सेयं परम्परा।।

(पञ्चदशी, पंचकोश विवेक प्रकरणम - 2)

अर्थात् शरीर प्राण-मन-विज्ञान आनंद विकास शब्द अपने आप में खुलना उद् घाटित होना, व्यक्त होना, फैलना आदि का सूचक है। व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास मनुष्य में छिपी शक्ति अथवा प्रतिभा का उद्घाटन करता है।

स्वामी विवेकानंद जी ने इस तथ्य की और संकेत करते हुए कहा है कि बच्चे में छिपी ऊर्जा का प्रस्फुटीकरण ही शिक्षा का लक्ष्य है। इस तरह भारतीय ज्ञान परम्परा के आधार पर शिक्षा का लक्ष्य पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने एवं न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है।

'भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते'

(श्रीमदभगवद् गीता, 17.16)

अर्थात् मन की प्रसन्नता, सौम्यता, शांति एवं स्वयं पर नियंत्रण तथा हृदय की शुद्धता ही मानसिक तपस्या है। यह स्थिति ही स्वयं में संतुष्ट रहने की अवस्था है।

आत्मन्वेवत्मना तुष्ट:

(श्रीमद्भगवदगीता 2.55)

इस तरह हम पाते हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा व्यष्टि (व्यक्ति) से समष्टि की ओर संकेत करती है। यहाँ व्यष्टि में समष्टि कल्याण निहित है। कुल मिलाकार हमें संसार में एकाकार स्वरूप में आगे कदम बढ़ाने की ओर इंगित किया गया है।

'समानी व आकूति: समाना हृदयानि व: समानमस्तु वो मनोयथा व: सुसहासति'

(ऋग्वेद 10-191-4)

उक्त ऋग्वेद की ऋचा का भावार्थ है - हम सभी का मन एक जैसा हो और सभी के निष्कर्ष भी एक जैसे हों, सभी का उद्देश्य एक हो, सुसंगत हमारी भावना हो, एकत्रित हमारे विचार हों, जैसे सब कुछ इस विश्व में एक है। ❑

भाषा, सम्प्रदाय, जाति, क्षेत्र आदि की विविधता में राष्ट्रीय एकता

शिशिर कान्त त्रिपाठी
शोधार्थी, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

एकता ही किसी राष्ट्र की तकदीर है जिसमें एकता नहीं वह राष्ट्र फ़कीर है, राष्ट्रीय एकता का मतलब जाति, पंथ, धर्म व लिंग की परवाह किए बिना लोगों के बीच बनी हुई एकजुटता है, जिसमें देश के सभी समुदाय व समाज के अंदर भाईचारे और सामाजिक एकता की भावना है। भारत देश कई विविधताओं से परिपूर्ण देश है, जहाँ अलग-अलग धर्म, भाषा के लोग रहते हैं लेकिन फिर भी राष्ट्रीय एकता की भावना विद्यमान हैं। सभी धर्म के लोग अलग-अलग ईश्वर को मानने के बावजूद एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। राष्ट्रीय एकता से ही कोई देश सदैव विकास एवं समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ता है। राष्ट्रीय एकता का महत्त्व जब जन-जन समझता है तब जाकर वह राष्ट्र इतिहास रचता है। राष्ट्रीय एकता देश को मजबूत और एकीकृत बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसके लिए देश के समाज के प्रत्येक वर्ग को अपना धर्म, जाति भूलकर एकजुट रहने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय एकता की वजह से ही किसी देश का सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास होता है। राष्ट्रीय एकीकरण की मदद से देश के सभी लोग एक साथ मिलजुल कर रहते हैं जहाँ किसी पर कोई बंधन नहीं होता है इसलिए जहाँ राष्ट्रीय एकता होती है वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन अपने तरीके से व्यतीत कर सकता है जिसे हम स्वतंत्रता कहते हैं।

भारत में 'अनेकता में एकता' इसकी मूल पहचान है और यह भारतीय संस्कृति और परंपरा को सबसे अलग एवं समृद्ध बनाने में मद्द करती है। हमारा देश भारत अनेकता में एकता की मिसाल है क्योंकि भारत ही एक ऐसा देश है जो इस अवधारणा को बेहतरीन तरीके से साबित करता है। सही मायने में अनेकता में एकता ही भारत की अखंड शक्ति और मजबूती है, जो भारत को विकास के पथ पर आगे बढ़ाती है और इसकी अलग पहचान बनाती है। भारत में कई अलग-अलग प्रांत हैं, जिसमें रहने वाले सभी लोगों की भाषा, जाति, धर्म, परंपरा, पहनावा आदि में काफी अंतर है जो कि (बंगाली, राजस्थानी, मारवाड़ी, पंजाबी, तमिल, मराठी) आदि के रूपों में जाने जाते हैं, जो अपने आप को भारतीय कहते हैं और यही भारत में अनेकता में एकता को दर्शाता है। भारत के लोगों की सोच, उनका आचरण, व्यवहार, चरित्र, उनके मानवीय गुण, आपसी प्रेम, संस्कार, कर्म आदि भारत की विविधता को एकता को बनाए रखने में मद्द करते हैं।

राष्ट्रीय एकता व अखंडता का महत्व देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना में 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 में समाजवाद, पंथनिरपेक्ष, अखंडता जैसे शब्द जोड़े। अनुच्छेद 15 के अनुसार धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग व जन्मस्थान के आधार पर कोई भी भेद-भाव नहीं किया जा सकता है। यह अनुच्छेद भाग-3 के मूल अधिकार में उल्लेखित है, जिसे भारतीय संविधान निर्माताओं ने अमेरिका के संविधान से लिया है। राष्ट्रीय एकता किसी भी देश के सभी लोगों के लिए एक बेहतर जीवन प्रदान करता है, जिसमें लोग अपने जीवन में बहुत ज्यादा विकास कर पाते हैं। राष्ट्रीय एकता की वजह से भारत जैसे विविधता व

 ISSN 2581-4133

बहुभाषी देश को एकजुट रहने में मदद मिलती है जहाँ बहुत सी संस्कृतियों व परंपराओं के लोग रहते हैं। राष्ट्रीय एकता की मदद से देश में जातिवाद, क्षेत्रवाद व भाषावाद का अंत होता है।

भारतीय संविधान का प्रमुख उद्देश्य देश की एकता व अखंडता को अक्षुण्य बनाए रखना है। अनुच्छेद 370 की समाप्ति से भी देश की एकता अखंडता को मजबूती मिली है तथा देश के विकास के नये द्वार खुले हैं। राष्ट्रीय एकीकरण किसी भी देश के विकास के लिए जरूरी है जिसके लिए देश के हर एक नागरिक के अंदर राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत करना होगा, अपने देश के सभी वर्गों पर ध्यान केंद्रित करना होगा और उन्हें आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर बनाना होगा जिसकी वजह से राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा मिल सकता है। राष्ट्रीय एकता दिवस मौजूदा केंद्र सरकार के प्रधानमंत्री से नरेंद्र मोदी ने 2014 से हर वर्ष 31 अक्टूबर को मनाने का फैसला लिया है। इस दिन को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में पूरे देश में मनाया जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल को लौह पुरुष की संज्ञा दी जाती है। यह दिवस मनाने का उद्देश्य भारत के सभी लोगों के बीच एकता भावना को बढ़ावा देना है। 'स्टैचू ऑफ यूनिटी' यह विश्व की सबसे ऊँची मूर्ति है जिसकी लंबाई 182 मीटर है। यह भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल जी को समर्पित एक स्मारक है, जो गुजरात में स्थित है। गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 अक्टूबर 2013 को सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिवस के मौके पर इस विशाल मूर्ति का शिलान्यास किया था। इसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के द्वारा 31 अक्टूबर 2018 को सरदार पटेल के जन्म दिवस के मौके पर किया गया, इस स्मारक का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है।

राष्ट्रीय एकता से ही राष्ट्र का विकास होगा तभी तो अपना भारत पूरे विश्व में सबसे खास होगा। राष्ट्रीय एकता से प्रत्येक व्यक्ति को लाभ पहुँचता है। भारत में राष्ट्रीय एकता के बल पर ही अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा और भारत देश को गुलामी से मुक्ति मिली। आधुनिक काल में इस राष्ट्रीय एकता के सामने संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद जैसी चुनौतियाँ है जिसमें वैश्विक आतंकवाद प्रमुख खतरों में से एक है, जिसमें कुछ कट्टरपंथी विचारों वाले लोग व्यक्तियों को उनके ही देश के खिलाफ भड़काते हैं जिससे आतंकवाद जैसी समस्या देश में उत्पन्न होती है, लेकिन राष्ट्रीय एकीकरण इन परिस्थितियों को अनदेखा करने में मदद करती है, यह लोगों को परिपक्व एवं सहनशील बनाता है।

राष्ट्रीय एकता देश को मजबूत और एकीकृत बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसके लिए देश के समाज के प्रत्येक वर्ग को अपना धर्म, जाति भूलकर एकजुट रहने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय एकता की वजह से ही किसी देश का सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास होता है। राष्ट्रीय एकीकरण की मदद से देश के सभी लोग एक साथ मिलजुल कर रहते हैं जहाँ किसी पर कोई बंधन नहीं होता है इसलिए जहाँ राष्ट्रीय एकता होती है वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन अपने तरीके से व्यतीत कर सकता है जिसे हम स्वतंत्रता कहते हैं।

राष्ट्रीय एकता सभी देश के लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है जो देश के लोगों के बीच समानता एकजुटता की भावना को बनाए रखना है जो एक राष्ट्र के अखंडता के खतरे को पूरी तरह से नष्ट कर देता है क्योंकि राष्ट्रीय अखंडता की वजह से देश खतरों से भरी पड़ी चुनौतियों का सामना करता है जिससे वह विदेशी हमले का शिकार भी हो जाता है इसलिए राष्ट्रीय एकता किसी भी देश के लिए महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्रीय एकीकरण से एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण होता है जहाँ अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति को विश्व में सबसे अलग और समृद्ध बनाती है, वहीं आजकल कुछ भ्रष्टाचारी राजनेता, वोट बैंक के लालच में जाति, धर्म और संप्रदाय आदि की राजनीति कर भारतीय एकता की शक्ति को कमजोर बना रहे हैं, जो कि निंदनीय हैं। भारतीय समाज में संपत्ति के लालच में भाई-भाई की हत्या कर रहा है और महिलाओं के साथ हो रहे अपराधों में इजाफा हो रहा है जो कि भारतीय संस्कृति की छवि को पूरे विश्व में धूमिल कर रहा है, इस तरह के विकार को हमें दूर करने की जरूरत है और यह तभी सम्भव जब हम सब एकजुट होकर इसके खिलाफ राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करेंगे। ❑

एकता का सेतु : शिक्षा की भूमिका

डॉ. श्रीकांत प्रकाश पाटिल
सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग,आदर्श विज्ञान, जे.बी. कला और बिड़ला वाणिज्य महाविद्यालय, धामनगांव रेलवे, जिला अमरावती, महाराष्ट्र

भारत एक बहुभाषीय, बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश है। यहाँ अनेक विविधताओं के बावजूद, एकता का भाव पूरे देश को एक सूत्र में बांधता है। इस राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने और मजबूत करने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा न केवल ज्ञान के संवर्धन का साधन है बल्कि यह लोगों को सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरूक भी करती है। यह व्यक्ति को यह सिखाती है कि वे विविधताओं को समझें और उनका सम्मान करें। इस प्रकार, शिक्षा समाज में एकता और अखंडता को बढ़ावा देती है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। यह उसे बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से मजबूत बनाती है। शिक्षा व्यक्ति को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे अपने समाज और राष्ट्र के प्रति जागरूक और उत्तरदायी नागरिक भी बनाती है। जब व्यक्ति शिक्षित होता है, तब वह अपनी जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से समझता है और समाज में व्याप्त असमानता, भेदभाव और अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं है। इसका लक्ष्य यह है कि व्यक्ति में सहिष्णुता, समभाव और भाईचारे की भावना उत्पन्न हो। यह व्यक्ति को सिखाती है कि वह दूसरों की भावनाओं का सम्मान करे, उनके दृष्टिकोण को समझे और आपसी मतभेदों को दूर करके समाज में शांति और एकता स्थापित करे। राष्ट्रीय एकता का तात्पर्य समाज के सभी वर्गों, धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधने से है। यह एक ऐसी भावना है, जो पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोती है

 ISSN 2581-4133

और समाज में शांति और स्थिरता लाती है। शिक्षा इस उद्देश्य को पूरा करने में अहम भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में देशभक्ति, सहयोग और भाईचारे की भावना विकसित होती है। भारत में विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग मिलजुल कर रहते हैं। विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थानों में विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों का मिलना-जुलना यह सिद्ध करता है कि शिक्षा समाज में भेदभाव को समाप्त करती है और समाज में एकता और समरसता की भावना को बढ़ावा देती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपनी संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करना सीखता है और दूसरों की मान्यताओं का आदर करता है।

जैसा कि संस्कृत का एक प्रसिद्ध सुभाषित है : ''विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्'' अर्थात्, विद्या विनम्रता लाती है, विनम्रता से पात्रता आती है, पात्रता से धन और धन से धर्म और सुख प्राप्त होता है। यह शिक्षा की महत्ता और समाज में उसके प्रभाव को दर्शाता है। आज के युग में जब समाज में विभिन्न प्रकार के मतभेद, असमानता और सांप्रदायिकता के मामले देखने को मिलते हैं, तब शिक्षा की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा व्यक्ति में सहिष्णुता और संवेदनशीलता का विकास करती है। यह व्यक्ति को सिखाती है कि किस प्रकार से वह समाज में शांति और सामंजस्य स्थापित कर सकता है। शिक्षा का उद्देश्य समाज में प्रेम, सहिष्णुता और समता का प्रचार करना है। शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों और कर्तव्यों को भलीभांति समझते हैं और समाज में फैली कुरीतियों का विरोध करते हैं। शिक्षा का असली उद्देश्य तब सिद्ध होता है, जब व्यक्ति समाज में समरसता और शांति को बढ़ाने में योगदान देता है। इसलिए शिक्षा

प्रणाली को अधिक समावेशी और सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों और कार्यक्रमों को सम्मिलित किया जाना चाहिए, जो राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करें। शिक्षा के माध्यम से छात्रों को यह सिखाया जाना चाहिए कि विविधताओं में एकता कैसे बनाई जा सकती है। विद्यालयों और महाविद्यालयों

जब तक समाज में शिक्षा का उचित प्रसार नहीं होगा, तब तक किसी भी राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुदृढ़ नहीं किया जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा को केवल औपचारिकता न मानकर इसे समाज में एकता और शांति का माध्यम बनाया जाए। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' अर्थात् सभी सुखी हों, सभी स्वस्थ रहें। यह शिक्षा के माध्यम से समाज में शांति और समरसता को बढ़ावा देने का संदेश देता है।

में विभिन्न सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन करके छात्रों में देशभक्ति और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहित किया जा सकता है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो न केवल ज्ञान का संवर्धन करती है, बल्कि समाज में शांति, एकता और समरसता को भी प्रोत्साहित करती है। जब तक समाज में शिक्षा का उचित प्रसार नहीं होगा, तब तक किसी भी राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुदृढ़ नहीं किया जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा को केवल औपचारिकता न मानकर इसे समाज में एकता और शांति का माध्यम बनाया जाए। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' अर्थात् सभी सुखी हों, सभी स्वस्थ रहें। यह शिक्षा के माध्यम से समाज में शांति और समरसता को बढ़ावा देने का संदेश देता है। शिक्षा के माध्यम से हम एक ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं, जहाँ विविधताओं के बावजूद सभी एकता और समरसता के सूत्र में बंधे हों। राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए शिक्षा को सही दिशा में और प्रभावी रूप से प्रयोग करने की आवश्यकता है। इस प्रकार, शिक्षा के माध्यम से हम एक सशक्त, एकजुट और प्रगतिशील भारत का निर्माण कर सकते हैं। ❑

भारत की सांस्कृतिक एकता और अखंडता में शिक्षा की भूमिका

डॉ. मेहुल पी. दवे
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पी.जी. प्रोग्राम, आई.आई.टी.ई. गांधीनगर

भारत असाधारण सांस्कृतिक विविधता का देश है, जिसमें भाषाओं, परंपराओं, धर्मों और कलात्मक अभिव्यक्तियों की एक विस्तृत श्रृंखला है। यह विविधता गर्व का विषय होने के साथ-साथ एकता बनाए रखने की चुनौती भी प्रस्तुत करती है। शिक्षा इस संतुलन को बनाए रखने में एक सेतु के रूप में कार्य करती है, जो विभिन्न सांस्कृतिक पहचानों को जोड़ते हुए सामूहिकता की भावना को प्रोत्साहित करती है।

सांस्कृतिक समझ के लिए एक आधार के रूप में शिक्षा

शिक्षा धारणाओं, दृष्टिकोणों और मूल्यों को आकार देती है, जिससे यह भारत के बहुलवादी समाज के प्रति सम्मान पैदा करने का एक शक्तिशाली साधन बन जाती है। पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक ज्ञान को एकीकृत करके, शिक्षा छात्रों को राष्ट्र की समृद्ध विरासत को समझने और उसकी सराहना करने में मदद करती है। यह समझ आपसी सम्मान को बढ़ावा देती है और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को कम करती है।

सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम – भारत के इतिहास और भूगोल के पाठ्यक्रम विभिन्न समुदायों जैसे – मौर्य, गुप्त, नंद, मुगल, चोल, मराठाओं आदि के योगदान का मूल्यांकन प्रस्तुत करते हैं। इससे छात्रों में विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान बढ़ता है।

भाषाएँ जोड़ने का माध्यम – भारतीय स्कूलों में लागू तीन-भाषा फार्मूला (हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा) छात्रों को आपस में संवाद करने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में सहायक बनता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) – सांस्कृतिक बंधनों को मजबूत करना। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को शिक्षा के माध्यम से बढ़ावा देने पर बल देती है। इसके अंतर्गत कई महत्त्वपूर्ण पहल की गई हैं –

स्थानीय कला और शिल्प का अध्ययन – क्षेत्रीय कला और शिल्प का अध्ययन करके स्थानीय पहचान को संरक्षित किया जाता है, जबकि विविधता की सराहना की जाती है।

पारंपरिक ज्ञान प्रणाली – आयुर्वेद, योग, और पारंपरिक कृषि पद्धतियों जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, जिससे आधुनिक शिक्षा और प्राचीन भारतीय ज्ञान के बीच सेतु का निर्माण होता है।

स्कूलों में सांस्कृतिक उत्सव – राष्ट्रीय त्योहारों और स्थानीय परंपराओं के उत्सवों को प्रोत्साहित करना समावेशिता को बढ़ावा देता है।

 ISSN 2581-4133

सांस्कृतिक अखंडता के उदाहरण

1. एक भारत श्रेष्ठ भारत (EBSB) – यह सरकारी योजना राज्यों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देती है। इसके तहत स्कूल और विश्वविद्यालय एक-दूसरे की भाषा, संस्कृति, और धरोहर को समझने के लिए जोड़े जाते हैं। जैसे, गुजरात के छात्र तमिल गीत सीखते हैं, और तमिलनाडु के छात्र गरबा नृत्य।

2. NCERT की सांस्कृतिक गतिविधियाँ – NCERT छात्रों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है, जहाँ विभिन्न भागों से आए छात्र एक-दूसरे की परंपराओं को सीखते हैं।

3. नवोदय विद्यालय – जवाहर नवोदय विद्यालयों में छात्रों को विविध पृष्ठभूमि से प्रवेश दिया जाता है। ये स्कूल छात्रों में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए अंतर-क्षेत्रीय आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

4. युवा महोत्सव और सांस्कृतिक आयोजन – IITE का कलाकुंज और राष्ट्रीय युवा महोत्सव जैसे आयोजन छात्रों को विभिन्न सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित और समझने का अवसर देते हैं।

सांस्कृतिक विखंडन के विरुद्ध शिक्षा का योगदान

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सांस्कृतिक विखंडन का खतरा हमेशा बना रहता है। शिक्षा इन खतरों को निम्नलिखित तरीकों से कम करती है –

आलोचनात्मक सोच विकसित करना – छात्रों को रूढ़ियों और गलतफहमियों का मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करना।

साझा मूल्यों को उजागर करना – अहिंसा, सहिष्णुता, और सम्मान जैसे सार्वभौमिक सिद्धांतों को केंद्र में रखना।

समावेशी स्थान तैयार करना – जाति, धर्म, या भाषा के आधार पर भेदभाव रहित शिक्षा सुनिश्चित करना।

भारत में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक एकता और अखंडता को पोषित करने का साधन भी है। प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, सांस्कृतिक समझ के तत्त्वों को शामिल करके, भारत अपनी विविधता का उत्सव मनाते हुए अपनी एकता को मजबूत कर सकता है। कक्षा में सीखे गए ये पाठ समाज में सौहार्द बनाए रखने में सहायक होंगे, जिससे भारत आने वाली पीढ़ियों के लिए 'विविधता में एकता' का आदर्श बना रहेगा।

उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका

विश्वविद्यालय और कॉलेज सांस्कृतिक आदान-प्रदान के केंद्र हैं। भारत में छात्र शिक्षा के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जाते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान स्वाभाविक रूप से होता है।

विश्वविद्यालय सांस्कृतिक उत्सव – SPIC MACAY (The Society for the Promotion of Indian Classical Music And Culture Amongst Youth) जैसी कार्यशालाएँ शास्त्रीय कलाओं को युवाओं तक पहुँचाती हैं।

क्षेत्रीय संस्कृतियों पर शोध – अकादमिक कार्यक्रमों के माध्यम से अल्पज्ञान सांस्कृतिक प्रथाओं पर शोध करना, जिससे उनकी संरक्षा और राष्ट्रीय ताने-बाने में उनका समावेश हो सके।

प्रौद्योगिकी और शिक्षा में सांस्कृतिक एकता

आधुनिक तकनीक, विशेष रूप से ऑनलाइन प्लेटफार्मों ने सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका को नया आयाम दिया है। DIKSHA और Swayam जैसे प्लेटफॉर्म विभिन्न भाषाओं में सामग्री उपलब्ध कराकर शिक्षा को समावेशी और सुलभ बनाते हैं।

निष्कर्ष

भारत में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक एकता और अखंडता को पोषित करने का साधन भी है। प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, सांस्कृतिक समझ के तत्त्वों को शामिल करके, भारत अपनी विविधता का उत्सव मनाते हुए अपनी एकता को मजबूत कर सकता है। कक्षा में सीखे गए ये पाठ समाज में सौहार्द बनाए रखने में सहायक होंगे, जिससे भारत आने वाली पीढ़ियों के लिए 'विविधता में एकता' का आदर्श बना रहेगा। ❑

भारतीय शिक्षा पद्धति और सांस्कृतिक चेतना

डॉ. चमकौर सिंह

सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, ए.एस. कॉलेज
फॉरवूमेन, खन्ना, पंजाब

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर और शिक्षा पद्धति ने सदियों से विश्व को प्रभावित किया है। भारतीय शिक्षा पद्धति ज्ञान के संचार के साथ-साथ व्यक्ति के जीवन, उसकी नैतिकता, समाज में उसकी भूमिका और संस्कृति के प्रति उसकी जिम्मेदारी को भी आकार देती है। भारतीय शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह मानवता, नैतिकता, और अध्यात्मिकता के साथ जुड़ी हुई है।

भारतीय शिक्षा पद्धति शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के साथ साथ व्यक्ति के आंतरिक शुद्धीकरण और सांस्कृतिक चेतना के निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित करती रही है। भारतीय शिक्षा पद्धति न केवल तात्कालिक जीवन को सुदृढ़ करने की बात करती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी और सशक्त संस्कार देने की ओर भी अग्रसर होती है।

भारत में शिक्षा वैदिक काल से प्रारंभ होती है। प्राचीन भारत में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार की ओर अग्रसर करना था। वैदिक काल में शिक्षा मुख्य रूप से गुरुकुल प्रणाली के तहत दी जाती थी। इस प्रणाली में शिष्य गुरु के पास जाकर, जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सीखते थे। यह शिक्षा प्रणाली केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें आचार-व्यवहार, नैतिकता, और धर्म का भी गहरा समावेश था।

वेदों और उपनिषदों में शिक्षा

भारतीय शिक्षा पद्धति की शुरुआत वेदों और उपनिषदों से हुई। वेदों में ज्ञान के

आधुनिक युग में जब पूरी दुनिया वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण की ओर बढ़ रही है, भारतीय शिक्षा पद्धति हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और अपने सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने की प्रेरणा देती है। यह न केवल बौद्धिकता, बल्कि नैतिकता, समाज सेवा, और आत्मिक शुद्धता की दिशा में भी मार्गदर्शन करती है। इस प्रकार, भारतीय शिक्षा पद्धति केवल एक शिक्षा प्रणाली नहीं, बल्कि एक जीवनदृष्टि है, जो राष्ट्र और समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

 ISSN 2581-4133

विविध रूपों का उल्लेख मिलता है– यथा, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इन वेदों के माध्यम से शिक्षा का उद्देश्य ब्रह्मा के ज्ञान को प्राप्त करना और मानवीय जीवन को उसके सर्वोत्तम उद्देश्य की ओर अग्रसर करना था।

उपनिषदों ने व्यक्ति में आत्मा, ब्रह्मा और परमात्मा के संबंध को समझाया। वे जीवन को एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करते हैं। उपनिषदों का मूल उद्देश्य, आत्मज्ञान और आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति, जो भारतीय शिक्षा में उच्चतम लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

गुरुकुल प्रणाली

प्राचीन भारत में शिक्षा का माध्यम गुरुकुल प्रणाली थी, जिसमें शिक्षक (गुरु) और छात्र (शिष्य) के बीच गहरे रिश्ते का निर्माण होता था। गुरुकुल में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता, संस्कार और जीवन के उद्देश्य का बोध भी कराया जाता था। यह शिक्षा प्रणाली न केवल विद्वान बनने की शिक्षा देती थी, बल्कि जीवन को एक सच्चे और सशक्त तरीके से जीवन जीने की कला सिखाती है।

बौद्ध शिक्षा और विश्वविद्यालय

बौद्ध काल में शिक्षा की परंपरा में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आए। बौद्ध धर्म ने ज्ञान की महत्ता को रेखांकित किया। नालंदा विश्वविद्यालय और तक्षशिला विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों की स्थापना की गई, जो न केवल धार्मिक शिक्षा देते थे, बल्कि चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, साहित्य, और अन्य विषयों में भी शिक्षा प्रदान करते थे। यह विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध थे और पूरे एशिया से विद्यार्थी यहाँ शिक्षा प्राप्त करने आते थे।

भारतीय शिक्षा पद्धति के आधार तत्त्व

भारतीय शिक्षा पद्धति में कई महत्त्वपूर्ण तत्त्व निहित हैं, जो इसे विशिष्ट और सार्वभौमिक बनाते हैं।

1. आध्यात्मिकता और नैतिकता – भारतीय शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता इसका आध्यात्मिक और नैतिक आधार है। यहाँ के महान ग्रंथ जैसे भगवद गीता, रामायण और महाभारत व्यक्ति को जीवन के उच्चतम उद्देश्य की ओर अग्रसर करते हैं।

2. व्यक्तित्व विकास – भारतीय शिक्षा में व्यक्तित्व के समग्र विकास पर ध्यान दिया जाता है। इसमें केवल बुद्धिमत्ता को ही नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक संतुलन को भी महत्त्व दिया जाता है।

3. आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान का संतुलन – भारतीय शिक्षा पद्धति भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है। यह जीवन के दोनों पहलुओं–सांसारिक और दिव्य– को समान रूप से महत्त्व देती है।

4. समाज सेवा और कर्तव्य – भारतीय शिक्षा में शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाज की सेवा करने का पाठ सिखाया जाता है। कर्मयोग का विचार प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए समाज में योगदान देने का उद्देश्य लक्षित करता है।

भारतीय शिक्षा पद्धति में सांस्कृतिक चेतना

सांस्कृतिक चेतना से तात्पर्य, अपने इतिहास, संस्कृति और परंपराओं के प्रति जागरूकता और प्रेम का होना। भारतीय शिक्षा पद्धति का सांस्कृतिक चेतना से गहरा संबंध है। यह केवल बाहरी शिक्षा नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर की चेतना को जागृत करने की पद्धति है, जो व्यक्ति को अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्य समझने के लिए प्रेरित करती है।

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि भारतीय संस्कृति में एक गहरी आध्यात्मिकता और महानता है, जो पूरी दुनिया को एकता और शांति का संदेश देती है। उन्होंने कहा था, ''भारत की संस्कृति, जीवन को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखने की क्षमता देती है। यही कारण है कि भारतीय शिक्षा के माध्यम से हम जीवन को एक उच्च उद्देश्य की ओर देख सकते हैं।''

भारतीय शिक्षा और सांस्कृतिक अस्मिता

भारत में शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक अस्मिता का संरक्षण और संवर्धन किया जाता है। भारतीय संस्कृति, इसके विविध रूपों में, एकता की भावना को बढ़ावा देती है। इसमें व्यक्तित्व के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करना, जिससे व्यक्ति अपने समाज के प्रति जिम्मेदारी को समझता है। भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाने के लिए प्रेरित करती है।

महात्मा गांधी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक चेतना और नैतिक शिक्षा को अत्यंत महत्त्व दिया। गांधी जी का मानना था कि ''शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि समाज को बेहतर बनाना है।'' उन्होंने शिक्षा को आत्मनिर्भरता, नैतिकता और भारत की सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने पर जोर दिया।

समकालीन भारतीय शिक्षा पद्धति

आज के समय में भारतीय शिक्षा पद्धति में कई बदलाव आए हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति और मूल्य आज भी भारतीय शिक्षा पद्धति की नींव बने हुए हैं। वर्तमान में भारत की नई शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को भी महत्त्व दिया जा रहा है, और इसके साथ-साथ जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को भी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर जोर दिया गया है।

आधुनिक युग में जब पूरी दुनिया वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण की ओर बढ़ रही है, भारतीय शिक्षा पद्धति हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और अपने सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करने की प्रेरणा देती है। यह न केवल बौद्धिकता, बल्कि नैतिकता, समाज सेवा, और आत्मिक शुद्धता की दिशा में भी मार्गदर्शन करती है। इस प्रकार, भारतीय शिक्षा पद्धति केवल एक शिक्षा प्रणाली नहीं, बल्कि एक जीवनदृष्टि है, जो राष्ट्र और समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। ❑

Unity in Diversity : Building Bridges Among India's Multicultural Student Communities

Amit Halder

Assistant Professor, Department of Botany Nabadwip Vidyasagar College, West Bengal

A country as multicultural as India, with a population of over 1.4 billion people cohabiting in the same space, needs national unity and is, therefore, very complex. The rich collab of languages, religions, and cultural practices presents unique challenges and opportunities for promoting unity among its citizens. Thus, Educational institutions would provide the most crucial arena of national integration among diverse groups of students, using these associations as platforms for students to interact with one another, learn from their differences, and forge a collective identity. National Educational Policy 2020 left a lot of scope through diverse learning methodologies to connect better among the multicultural student communities in India. University Grants Commission also holds short curricula that celebrate special historical dates and modern achievements of India through seminars and conferences frequently for students in higher education. This generates a feeling of brotherhood and a sense of nationalism and pride over our rich heritage among the students. The diversity of India is not merely a demographic characteristic; it makes up the nation's social fabric. Every region has its own culture, which, though different, adds to the richness of Indian

Curricular teaching should include lessons on inclusivity, empathy, and 'understanding differences'. Institutions can play a pivotal role in countering divisive narratives by fostering an environment where dialogue and differences are encouraged rather than feared.

 ISSN 2581-4133

society. However, this diversity can create misunderstandings and divisions if not adequately managed. Educational institutions are microcosms of Indian cultures where students belong to different backgrounds. This gives students a rich opportunity to learn differences through their interactions in class, co-curricular activities, and cultural programmes.

In this diverse nation, our educational institutions play the most crucial role in promoting national unity among diverse groups of students. They are melting pots wherein students come together to learn academic subjects and life skills such as empathy, teamwork, and respect for others. Active participation in national celebrations such as Independence Day and Republic Day and birth anniversaries of our beloved national heroes creates a shared identity among the students. Group activities provoke participation and instil a sense of belongingness to a more significant nation. Cultural festivals across the east to west of India, held in schools,display region-specific practices by students while paving the appreciation of others from their peers. Interactions like this help break stereotypes and foster appreciation for the diverse cultural landscape of India. Collaborative projects involving students from different backgrounds, irrespective of their caste, creed, and religion, can enhance understanding and mutual respect. Programs like the National Integration Camp or youth exchange programs in the Jawahar Navodaya Vidyalaya systems expose students to peers from various states, giving them firsthand contact with cultures and issues around the different states. It makes the group debate over preconceived notions and nurtures dialogue to make deeper connections between students. In addition, schemes like the National Service Scheme (NSS) and the National Cadet Corps (NCC) are designed to encourage our budding studentpool to undertake community service and leadership activities across the regional lines. Such schemes create fraternal feelings among the participants andprove vital for igniting a sense of responsibility towards this great nation.

Social media and online forums are today's avenues for this endeavour. This provides youth a medium to associate with fellow Indians, who otherwise would not be in a personal space. They can express their ideas, share deliverables, or work on projects with fellow students. This digital landscape helps create virtual spaces where diversity can be celebrated and not considered an obstacle. This digital connectivity promotes an identity among youths throughout the country. This can be achieved by discussing various social causes or India's multiculturalism within social movements among the students who connect online. This will help them realise that they are all part of one broad community working towards expected results despite their differences.Despite the strides made toward building national unity among diverse student groups, there are

challenges. Divisive forces exploit cultural or socio-economic differences to gain political mileage. Promoting tolerance and respect is imperative for education providers in such an environment. It is only by providing students with clear critical thinking skills that challenges can be well managed. As education falls under India's concurrent subjects, consensus is sometimes not building up from the regional counterparts on National Educational Policies, leading to ambiguous curriculum management in the country. It is evident from the lethargy shown in implementing NEP 2020 in their respective states by a few states that this is the reason behind the delay in establishing uniformity in course curriculum frameworks across India. Another part concerns the character-building of these budding minds through holistic teaching practices, which are instrumental to shaping India with gross national characteristic traits. Curricular teaching should include lessons on inclusivity, empathy, and 'understanding differences'. Institutions can play a pivotal role in countering divisive narratives by fostering an environment where dialogue and differences are encouraged rather than feared.

Multicultural education is a vital strategy that can significantly improve national integration in schools across India. Diverse histories, beliefs, and practices incorporated into the curriculum by schools will enable students to appreciate cultures prevalent among others. Multicultural education can play an essential role in reducing cultural conflicts among students through socialised acceptance and tolerance. Courses that include the telling of various cultural narratives-even those of marginalised communities-enhance the understanding of their peers' backgrounds among the students. This makes their academic experiences rich and full, contributing to personal growth in the form of empathy. Extracurricular activities are critical in implementing multicultural education in any learning institution. Cultural exchange or diversity clubs can allow students to share their cultures while learning about others. Such activities contribute to building friendships across cultural divides and create an inclusiveness atmosphere within learning institutions.A culture of national unity must grow within the diverse groups of students in India. The institution of learning is a crucial room for mutual understanding and respect among different groups of students. Through working experience, collaborative projects, digital connectivity, and multicultural education, students learn to appreciate the strength that lies in diversity. As they enter different professional career streams, these young minds will experience unity in diversity as they will find their skills to help them better deal with an increasingly integrated world. Embracing differences and, at the same time,recognising shared identity as Indians makes society more cohesive. National unity through fostering preps future leaders that preach peace, tolerance, and mutual respect for fellow citizens. Carrying these values into adulthood will shape a harmonious and progressive India that celebrates its rich diversity while standing united against divisive forces. ❑

ISSN 2581-4133

The Role of Education in the Unity of Bharat

Dr. TS Girish Kumar

Retd. Professor,
MSU Baroda, Gujrat
Member ICPR

How and to what extent a concept of unity shall be intelligible on a common parlance shall be a question to be pondered upon, in the light of seeing multiple usage of the given concept demonstrated publicly. To this, conceiving the concept of unity becomes important on any practical application at any level. Hence the question, 'what is it to say that unity' shall indeed be making sense.

Peripherally, unity shall amount both resemblance and similarity and uniformity at the same time. One may take that 'resemblance plus similarity divided by difference plus unknown points' should amount to strong unity, but can we say that this shall make sense? Or, shall we say that homogeneity shall amount to unity? Fact of the matter is that we shall know at once that none of these exercises can come anyway near what we aspire to understand from unity, which puts us back to square one, what is it to say that 'unity'?

In fact, unity is a concept that goes much beyond homogeneity, uniformity, similarity or any such things. Precisely, this shall be because we are trying to speak of humans and human societies and not vegetables. Here, a difference between peripheral similarity and mental unity gets automatically streamlined. Any thought that homogeneity, similarity etc. shall eventually lead to unity gets simply stultified: one only has to take the example of the unity of the nation Pakistan.

The champions of two nation theories thought so, and Jinnah alone knew that these people can never be united, and there shall be infights among them on all kinds of grounds once the Islamic nation is formed: and Jinnah wanted not a nation for them, but confirmed reservations for them on all aspects of Bharat including Parliament and other such houses in democracy. Of course, in such situations their population would have grown beyond the Hindus by now, and the Hindus must have become rather extinct.

And, the concept of unity ought to be much different, and much more than these things.

Concept of Unity from the Rg. Veda

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
[ऋग्वेद - 8/8/49/4]

This Sukta (which is the last Sukta) simply tells us what is real unity; and it also tells us that unity is real strength. Through getting

united in this manner, one goes from strength to strength is the principle.

What should one think, seeing the manner in which the Rg.Veda is getting concluded?

Unity of Bharat

Unity of Bharat is the unity based on the Vedopanishadic knowledge tradition. Vedas Upanishads etc. are knowledge texts and not religious texts as commonly gets projected – they also don't make their knowledge categorical and imperative. Their knowledge, the acceptance and non-acceptance are simply optional – depending on how one gets them understood and convinced. This, precisely is what one understands from the Mimamsa Darshana.

This creates the Vedopanishadic knowledge tradition, which is dynamic, thus flexible, ever becoming, thus open ended. There is always a new meaning, given a new situation. Bharatiya Sanskriti is the evolutionary manifestation from such a knowledge tradition, where, the transcendental longing of the same evolves into Dharma. On all practical account, Sanskriti carries, preserves, protects and transmits these from one generation to the other and so on. All told, in all practical connotations, it is the Bharatiya Sanskriti that keeps Bharat unified.

Bharatiya Sanskriti is functionally unconnected with any faith system, or all faith systems. Hence, religion has nothing to do with Bharatiya Sanskriti, rendering all Bharatiyas sharing the same Sanskriti. This makes the unity of Bharat natural and spontaneous. Even when someone attempts to function against the unity of Bharat, the inescapabilty of Bharatiya Sanskriti shall make it impossible, in spite of any amount of false consciousness or alienation from own roots. This make all such phenomena only temporary.

Education

Our education should impart Bharatiya Sanskriti through our education as an inescapable reality with us in spite of all contradictions and odds. The Vedopanishadic epistemology of coexistence should function as an ontological existential status while discussing Bharatiya societies, to project that Bharat has only multiple variations in multiple patterns of the one the only reality with multiple appearances. There is no 'diversity' and a synthetic unity, which was made a slogan of 'unity in diversity' by fetishized rulers of the past: the reality of Bharatiya knowledge system and tradition were suppressed and concealed to common people as they have concealed the history of Vijayanagara, the mighty Hindu empire. It is not only the case that facts were suppressed, but also that fake theories were propagated and taught rather shamelessly. Copying the story of Vijayanagara emperor Krishnadevaraya and Tenali Rama, they created a Birbal Akbar story ! Copying the case of 'Navratnas' in the court of Chandragupta Vikramaditya of Ujjain, they created a fake story of Navratnas in Akbar's court and such shameless narratives. Whoever told the truth, that Akbar did not even know how to read and write?

Our education system kept suppressing truth for all these years. Just see the names of the education ministers of Bharat in Congress rule, anyone can see the truth instantly. Therefore, the education in Bharat has tobe deconstructed first and reconstructed upon truth and facts – one need not to glorify the Vedopanishadic knowledge tradition, they are glorious by default.

We are not aspiring to make a go back through some 'U' turn in time, we are only aspiring to rediscover our reality with truth and history in the present time and space. In all, education in Bharat must carry the spirit of the Vedopanishadic knowledge tradition and the virulence as well as the dynamic vitality of our ancestors. How to put them into practice need to be worked by the right kind of people through time and space, and this shall become functional reality in time without much delay. ❑

We are not aspiring to make a go back through some 'U' turn in time, we are only aspiring to rediscover our reality with truth and history in the present time and space. In all, education in Bharat must carry the spirit of the Vedopanishadic knowledge tradition and the virulence as well as the dynamic vitality of our ancestors. How to put them into practice need to be worked by the right kind of people through time and space, and this shall become functional reality in time without much delay.

Causal Relationship between Political Unity and Development of Education

Dr. Arjun Gope

Associate Professor
Govt. Degree College, Tripura

Indian education system was developed by our esteemed gurus. Given the history of Indian education system, it was based on knowledge, skill and practical application that were imbibed with individual's spiritual insight. The Gurukul educational system used to provide students with value based education. Unfortunately, the foundation of the Indian educational system was eroded by the destructive invasions that took place between the 12th and 18th centuries. The terrible devastation of Nalanda marked the heights of insane destruction. However, during the periods that followed, Britishers also worked with the same mission though with different strategies. The British first considered the Gurukul education system an illegal education system with an objective to enslave the whole nation. The national leaders, though had a lot of power to revive our previous educational system after independence, but they were also involved in the process of making slaves and factory workers. In this sense, we inherited the educational system from the British, who created it to help the populace manage their empire.

In the quest for a secure and prosperous society, political unity and the advancement of education are closely related, impacting and complementing one another. Political confederacy depends on the development of knowledgeable citizens, social cohesiveness, and economic progress, all of which get manifested through dispensing appropriate education. On the other hand, a cohesive political structure creates the ideal conditions for successful functioning of educational institutions and programs.

Dependency of political unity on education system : Education is the only outlet and the only recourse that can establish political integrity. Appropriate education can provide the knowledge and skills to participate in the political arena by being properly educated about leading

civic life. Promotion of quality education remains at the core of the democratic values that enhances participation in the political sphere and performing duties related to manifestation of patriotism or national welfare. Any service related to nation building or state management, calls for appropriate value based education that an individual needs to manifest in his or her mind and undoubtedly, education system plays an important role in the manifestation of perfection in men. Consistent acquisition of appropriate education and its application can only lead to political unity. For example, people having diverse range of experience backed by culture, religion, class and creed tend to join the arena of politics. However, diverse boundaries are needed to be blurred to proceed towards achieving common interest renouncing vested interest and work together for the sake of social welfare. Sound and appropriate education system can develop resilience in human beings to think rationally and work for justified cause. Another major objective of political action is economic development and maintenance of social environment. Economic development has a special contribution to poverty alleviation and overall social stability through increasing productivity. Economic development of a nation is also enhanced by political contribution but this political management system is again backed by quality of education. In other words, education directly or indirectly, contributes to the development of political parties and they in turn, enhance economic development and social environment development projects.

Dependency of education system on political unity: On the other, for achieving quality education political unity is a highly needed parameter. Political unity does not mean that all the political parties will work under the same banner rather it indicates that all the political parties work for a common cause and will feel good for successful achievement and bad for the failure. Thus, all the political parties at national or state level should work on the basis of common political will and at least for the basic and security needs of the citizen. Comprehensible educational policy cannot be developed and implemented without a unified political system. Long-term planning and investment in education are made possible by political stability, which guarantees that policies are successfully implemented and maintained throughout time. In contrast, political fragmentation can lead to inconsistent policies and hinder educational progress.

The political parties may capitalise for their own benefit but in this case national interest may be threatened. For example, National Education Policy (NEP) 2020 has been implemented across the country. Now being education included in the concurrent list, the state government of all the states also required to adopt the same and proceed for its implementation. But given the different political parties at work in the central and state level, few state governments strongly denied to implement

NEP- 2020 in their respective States. But if we review the formation to implementation process of NEP, we will observe that NEP-2020 has been framed out on the basis of bottom to top approach instead of top-down approach which means the common men of the nation have given their views and suggestion in favour of formation and implementation of NEP- 2020 considering the interest of the student community in specific and for the interest of the nation in general. But only due to lack of political integrity, the student community and the society have been deprived from their rights regarding the implementation of NEP, at a time, across the country.

Political unity makes it easier to distribute resources fairly, guaranteeing that educational establishments in various areas have enough money and assistance. This fair distribution is essential for preserving high-quality education across the country and avoiding inequalities that can spark political and social unrest. The political unity remains a major concern in different such issues as abolishment of school fees, transfer of stipend, scholarship through Direct Benefit Transfer (DBT) system, launching Mid-Day Meal (MDM) and so on. The cases of teaching faculties training and development programme, salary and pay package are also not at per across the nation and at times such discrepancies happen only due to the lack of political unity and integrity. However, securing resources to enhance the quality of educational environment, political will and political commitment is mandatory.

In the quest for a secure and prosperous society, political unity and the advancement of education are closely related, impacting and complementing one another. Political confederacy depends on the development of knowledgeable citizens, social cohesiveness, and economic progress, all of which get manifested through dispensing appropriate education. On the other hand, a cohesive political structure creates the ideal conditions for successful functioning of educational institutions and programs.

A supportive environment for educational institutions is created by strong political unity, which encourages accountability and good governance. The correct operation of educational systems, including curriculum creation, faculty preparation, and assessment procedures, depends on effective governance structures. However, this political disintegration may work similarly within the same political party also. For example, a state government may want to maintain the peaceful environment in educational institutions but at the local level political wings belonging to the same political ideology may damage the peaceful environment in an educational institution. Thus the political integrity is needed within the political party and among the different political parties to enhance the quality of the education for the interest of the students' community and for the nation. ❑

National Unity : A Cornerstone of NEP 2020

Darshan Kumar
Teacher
Poonch (JK UT)

The National Education Policy (NEP) 2020 is a transformative document poised to redefine India's education system, fostering holistic development, cultural pride, and national unity. This visionary framework emphasizes inclusivity, equity, and rootedness in Indian culture, ensuring that education not only equips students with academic skills but also connects them with their heritage and instills a sense of national integration. Its relevance extends beyond India's borders, showcasing the universal value of a culturally inclusive and future-focused education system.

NEP 2020 and National Unity: Key Provisions

1. Emphasis on the Indian Knowledge System

NEP 2020 emphasizes incorporating India's rich cultural and historical legacy into the curriculum. By promoting the study of ancient texts, traditional knowledge, and diverse philosophical systems, the policy seeks to instill pride in students about India's historical achievements. These efforts aim to foster a connection between learners and their cultural roots while bridging generational gaps in knowledge transmission.

Reference : NEP 2020, Chapter 3, Section 3.3.1

2. Promoting Multilingualism

The policy champions the use of regional languages as mediums of instruction, especially in early education. By advocating multilingualism, NEP 2020 not only enhances cognitive abilities but also fosters unity through linguistic inclusivity. This approach ensures that students

Prime Minister Narendra Modi has described NEP 2020 as a cornerstone of India's nation-building efforts. Speaking on the first anniversary of the policy, he remarked, "India's NEP 2020 is a pivotal step towards empowering our youth by connecting them with their heritage while equipping them for a global future. It fosters unity by respecting diversity and upholds the ethos of 'Ek Bharat, Shreshtha Bharat' (One India, Great India)." He highlighted how NEP enables a holistic education system that nurtures critical thinking, innovation, and rootedness in Indian culture.

 ISSN 2581-4133

from diverse backgrounds feel represented and connected to their local and national identity.
Reference : NEP 2020, Chapter 4, Section 4.2.1

3. Vocational Education and Skill Development

NEP focuses on making education more practical and relevant by integrating vocational training into the curriculum from the school level. This initiative ensures students gain skills to contribute meaningfully to society and the economy. By addressing unemployment and fostering self-reliance, the policy strengthens societal cohesion.
Reference : NEP 2020, Chapter 5, Section 5.2.1

4. Reforms in Teacher Education

Recognizing teachers as the cornerstone of quality education, NEP 2020 calls for comprehensive reforms in teacher training. It emphasizes nurturing teachers capable of delivering value-based education and fostering critical thinking and empathy in students. This initiative aims to create a generation of responsible citizens committed to national progress.
Reference : NEP 2020, Chapter 6, Section 6.2.1

5. Value-Based Education

The policy prioritizes value education to inculcate ethics, compassion, and respect for diversity in students. By fostering an environment of mutual respect and understanding, NEP 2020 strengthens the fabric of national unity. It highlights the importance of shared values and collective responsibility in building a harmonious society.
Reference : NEP 2020, Chapter 7, Section 7.1.1

Global Relevance of NEP 2020

NEP 2020 aligns with global educational priorities such as cultural preservation, sustainability, and holistic development, making it a model for other nations. Its emphasis on multilingualism and cultural inclusivity mirrors successful strategies employed in countries like Finland and Singapore, where education systems balance global competencies with national identity. By integrating traditional knowledge with modern education, NEP 2020 addresses the universal challenge of maintaining cultural heritage in a rapidly globalizing world.

Comparative Analysis : NEP 2020 and Global Education Policies

When compared to educational policies in countries like Finland, Japan, and Singapore, NEP 2020 stands out in its holistic approach. Finland's education system, renowned for its emphasis on equality and teacher autonomy, shares similarities with NEP's focus on equitable access and comprehensive teacher training. Similarly, Singapore's integration of vocational training and emphasis on multilingualism resonate with NEP's vocational education and language policies. However, NEP 2020 uniquely integrates India's diverse cultural heritage, providing a distinctive framework that fosters both national unity and global competitiveness.

Fostering Unity Through Technology

Technology-driven initiatives under NEP 2020, such as digital classrooms and e-learning platforms, play a pivotal role in bridging regional disparities and fostering inclusivity. The National Digital Education Architecture (NDEAR) and the National Education Technology Forum (NETF) provide a robust digital and technological framework, ensuring that quality education is accessible to students across urban and rural areas. These initiatives not only democratize learning but also connect students from diverse backgrounds, promoting collaboration and shared understanding.

Prime Minister Narendra Modi has described NEP 2020 as a cornerstone of India's nation-building efforts. Speaking on the first anniversary of the policy, he remarked, "India's NEP 2020 is a pivotal step towards empowering our youth by connecting them with their heritage while equipping them for a global future. It fosters unity by respecting diversity and upholds the ethos of 'Ek Bharat, Shreshtha Bharat' (One India, Great India)." He highlighted how NEP enables a holistic education system that nurtures critical thinking, innovation, and rootedness in Indian culture.

Dr. K. Kasturirangan, Head of the NEP Drafting Committee, emphasized the significance of the Indian knowledge system and multilingualism in fostering national integration. He stated, "NEP 2020 is designed to create an educational framework that strengthens the social fabric by celebrating India's linguistic and cultural diversity. It ensures students are not only academically competent but also deeply connected to their cultural heritage."

Union Education Minister Dharmendra Pradhan has described NEP 2020 as a transformative milestone for Indian education. He stated, "The policy's emphasis on regional languages, cultural inclusivity, and vocational training reflects its commitment to building a united and skilled nation. It is a roadmap for nurturing a new generation of responsible and patriotic citizens."

Implementation Initiatives Under NEP 2020

Several initiatives under NEP 2020 reinforce its commitment to national unity:

Academic Bank of Credits : This system allows students to seamlessly transition between disciplines, fostering multidisciplinary learning and inclusivity.

National Education Technology Forum (NETF) : By promoting digital tools and resources, the policy ensures equitable access to quality education across diverse regions.

Promotion of Regional Languages : The introduction of engineering courses in regional languages exemplifies NEP's focus on linguistic diversity.

National Sign Language as a Subject : Recognizing the need for inclusive education, NEP 2020 has accorded Indian Sign Language the status of a subject, benefiting over 300,000 students requiring sign language for their education.

Structured Assessment for Analyzing Learning Levels (SAFAL) :

This competency-based assessment framework aims to eliminate exam fear, encouraging students to develop new skills and innovate.

Building a Knowledge-Based Economy

NEP 2020 positions India as a global knowledge hub by emphasizing innovation, research, and vocational education. By fostering a skilled workforce through practical training and multidisciplinary education, the policy supports the growth of a knowledge-based economy. Initiatives like the Artificial Intelligence program and Industry 4.0 leadership prepare students to excel in emerging fields, driving economic growth and technological advancement.

Multilingualism : A Pathway to Global Competence

The NEP's multilingual approach not only fosters unity within India but also enhances students' global communication skills and cultural adaptability. By learning multiple languages, students gain the ability to engage with diverse cultures, fostering international collaboration and understanding. This linguistic proficiency equips Indian youth to compete and collaborate effectively on the global stage, promoting India's cultural and intellectual presence worldwide.

Global Citizenship and Sustainable Development

While rooted in Indian values, NEP 2020 also emphasizes global awareness, preparing students to engage with the world as informed and responsible citizens. Its focus on environmental education and sustainable development aligns with the United Nations Sustainable Development Goals (SDGs), particularly in education, equality, and sustainable livelihoods. By integrating these global priorities, NEP 2020 ensures that Indian students are equipped to address both national and international challenges, contributing to a sustainable and equitable world.

Conclusion

The National Education Policy 2020 is not merely a reformative educational framework but a transformative initiative aimed at nation-building. By promoting cultural heritage, multilingualism, skill development, and value education, the policy envisions an India where unity and diversity coexist harmoniously. As it equips students with the tools to succeed globally while remaining connected to their roots, NEP 2020 paves the way for a future that is not only academically robust but also culturally and socially cohesive.

Through its multifaceted approach, NEP 2020 stands as a beacon for fostering national unity, aligning with the ethos of building a self-reliant, united, and progressive India. Its global relevance and comprehensive initiatives make it a model for other nations striving to balance cultural preservation with modern educational advancements. As NEP 2020 continues to unfold, it promises to shape a generation of informed, skilled, and responsible citizens dedicated to the nation's progress and global harmony. ❑

National Unity : Constitution and NEP 2020

Dr. Pargat Singh Garcha

Principal, GHG Khalsa College of Education, Gurusar Sadhar, Punjab

The Indian Constitution envisions education as a means to foster democratic values, social justice, and national integration. It positions education as the cornerstone of individual growth and societal transformation. The National Education Policy (NEP) 2020 builds on these ideals, addressing the challenges of contemporary Bharat while striving to create an inclusive, equitable, and culturally enriched education system. This paper explores the intersection of the Indian Constitution and NEP 2020 in promoting national unity, analysing their shared vision and actionable frameworks for fostering harmony in a diverse society.

Introduction

Bharat and India both names, enshrined in the Constitution under Article 1, emphasize the unity of the nation, with Bharat often symbolizing traditional values and India reflecting modern aspirations.Diversity in Bharat is characterized by its vast cultural, religious,linguistic, regional and ethnic variations, making our country one of the most pluralistic societies in the world. We have 22 official languages and more than 2,000 dialects, different geographical conditions, varied culture, numerous religions, traditions, and festivals. This rich tapestry of differences fosters a unique cultural harmony while contributing to the nation's vibrant identity. Bharat epitomizes "unity in diversity."Education is a fundamental element of nation-building.The framers of the Indian Constitution recognized education's transformative power, embedding it as a tool for democracy, equality, and fraternity. These principles are reinforced in NEP 2020, which emphasizes the integration of cultural heritage, ethical values, and inclusivity to create a cohesive and progressive society.The alignment of constitutional ideals with the NEP 2020 framework underscores their shared commitment to fostering national unity. This paper delves into the constitutional vision of education, highlights NEP 2020's approach to achieving national integration, and identifies their synergies and challenges.

Constitutional Vision of Education and National Unity: The Indian Constitution embeds education as a fundamental right, recognizing its role in individual and societal advancement. Key provisions related to education include:

1. Right to Education (Article 21A) : Introduced by the 86th Amendment, Article 21A guarantees free and compulsory education for children aged 6 to 14. This provision ensures that every child, irrespective of socio-economic background, has access to quality education (Government of India, 1950).

2. Directive Principles of State Policy : Articles 41, 45, and 46 emphasize the state's responsibility in promoting education, particularly for marginalized and weaker sections of society. Article 46 explicitly calls for measures to protect and promote the educational interests of Scheduled Castes, Scheduled Tribes, and other disadvantaged groups.

3. Cultural and Linguistic Rights : Articles 29 and 30 safeguard the rights of minorities to preserve their culture and language, ensuring education serves as a bridge rather than a barrier to national unity.

The constitutional vision views education as more than mere knowledge acquisition. It is a means of fostering patriotism, promoting equality, and bridging the divides of caste, religion, and language. Dr. B.R. Ambedkar emphasized education as a tool to empower the oppressed and integrate them into the national mainstream (Ambedkar, 1950).

NEP 2020 and Its Approach to National Unity : NEP 2020 envisions a transformative approach to education, aiming to create citizens who are not only skilled and knowledgeable but also empathetic, culturally rooted, and globally aware. Key pillars of NEP 2020 that contribute to national unity include:

1. Equity and Inclusion : NEP 2020 places strong emphasis on equity, aiming to reduce disparities in access and quality of education. Special Education Zones (SEZs) and Gender Inclusion Funds are designed to support students from marginalized backgrounds. This focus aligns with constitutional goals of justice and equality, ensuring that all citizens can contribute to and benefit from national progress (Ministry of Education, 2020).

2. Multilingual Education : The three-language formula encourages students to learn their regional language, Hindi, and English. By promoting linguistic harmony, NEP 2020 fosters communication across states while respecting linguistic diversity, contributing to a sense of shared national identity (Gupta, 2021).

3. Value-based and Constitutional Education : The policy emphasizes integrating ethical and constitutional values into the curriculum. By teaching students about democracy, secularism, and fraternity, it seeks to instill a sense of responsibility and belonging, critical for maintaining national unity (Bhattacharya, 2021).

4. Integration of Indian Knowledge Systems (IKS) : NEP 2020 encourages the inclusion of Indian Knowledge Systems in the curriculum, celebrating India's rich heritage in philosophy, science, and arts. This approach fosters cultural pride while highlighting the inter-

The Indian Constitution and NEP 2020 collectively provide a comprehensive framework for fostering national unity through education. By emphasizing inclusivity, equity, and respect for diversity, they aim to create a society that is cohesive yet pluralistic. Effective implementation of these frameworks, supported by adequate resources and political will, can transform Bharat's diverse population into a unified and progressive nation. Viksit Bharat vision can only be achieved by using this diversity as productive tool for economic, social and cultural development of our country.

connectedness of India's diverse traditions (Ministry of Education, 2020).

5. Holistic Development : NEP 2020 promotes a multidisciplinary approach, encouraging critical thinking, creativity, and problem-solving. These skills are essential for fostering empathy and understanding in a diverse society, contributing to national integration.

Synergies between the Constitution and NEP 2020 : Both the Constitution and NEP 2020 emphasize inclusivity, equity, and unity. The Constitution lays the foundation by defining education as a fundamental right and outlining the state's responsibilities, while NEP 2020 operationalizes these principles to address modern challenges.

For instance :

The Constitution's emphasis on minority rights (Articles 29 and 30) aligns with NEP 2020's focus on preserving linguistic and cultural diversity.

Article 46's call to promote education among marginalized communities resonates with NEP 2020's initiatives like SEZs and scholarships.

Both frameworks emphasize value-based education, aiming to create responsible, empathetic citizens who contribute positively to society.

The synergy between these frameworks ensures education remains a powerful tool for uniting Bharat's diverse population.

Challenges and Recommendations : While the vision of national unity through education is robust, challenges persist:

1. Regional Disparities : Uneven distribution of resources and infrastructure hampers access to quality education in rural and remote areas.

2. Socio-economic Barriers : Poverty and inequality limit the reach of educational initiatives among marginalized groups.

3. Implementation Gaps : Translating policies into practice remains a significant challenge due to bureaucratic inefficiencies and lack of trained educators.

Recommendations :

Increase Funding : Allocating more resources to education, particularly in underserved areas, can help bridge gaps.

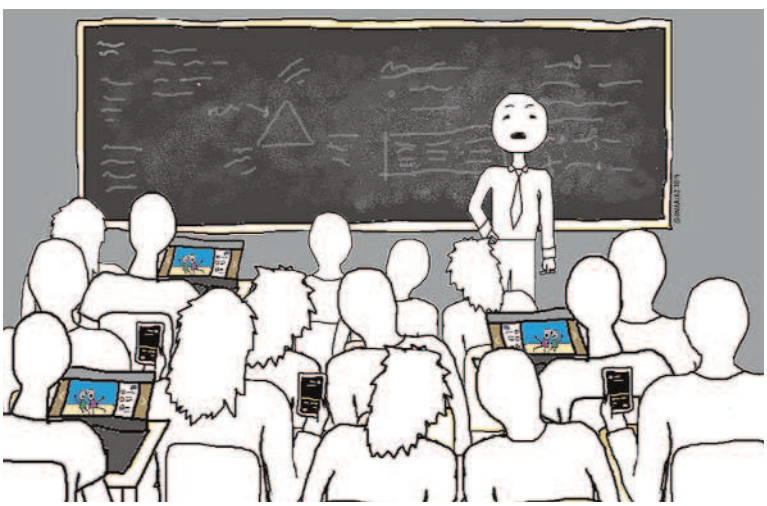

Focus on Teacher Training : Equipping teachers with skills to handle diverse classrooms and promote inclusivity is essential.

Strengthen Civic Education : Incorporating lessons on constitutional values and democratic principles at all levels can enhance social cohesion.

Equality both productive and distributive : Government of Bharat, to increase thepotentiality of Human resource development by emphasizing equality both productive and distributive measure.

Conclusion

The Indian Constitution and NEP 2020 collectively provide a comprehensive framework for fostering national unity through education. By emphasizing inclusivity, equity, and respect for diversity, they aim to create a society that is cohesive yet pluralistic. Effective implementation of these frameworks, supported by adequate resources and political will, can transform Bharat's diverse population into a unified and progressive nation. Viksit Bharat vision can only be achieved by using this diversity as productive tool for economic, social and cultural development of our country. Everyone need to realize that this diversity can become a liability unless it is entrenched into a social system. Inclusive richness depends on integrating diverse groups into a uniform societal network. National Unity is a social forceamong the different societal factions. It creates a singular social fabric and building an integrated national front to tackle internal and external challenges.❑

Education and National Integration of India

Dr. Rakesh Bharti

Assistant Professor of Education
Govt. College of Education, Canal Road, Jammu

India is a land of diversities. People having diverse backgrounds feel a strong attachment to their national identity. This attachment contributes to a sense of unity and cohesion within diverse societies. It develops a sense of belongingness among the members of larger community with shared customs, language, history and traditions. This sense of belonging promotes feelings of connection, solidarity and unity among citizens.A unified nation with a strong sense of national identity reflects the idea of 'One Nation'. This idea of one nation among the citizens is regarded as National Integration.

National integration emphasizes the importance of mutual respect, cooperation, and shared values in building a harmonious society. It is a powerful idea, manifesting through collective action in the nation's interest, ensuring social harmony, justice, cultural enrichment, and national progress. Among the many avenues that contribute to national integration, education stands out as a pivotal force.

India is a country that proudly embraces its incredible diversity—a land where different languages, religions, and cultures coexist in vibrant harmony. Yet, amidst this rich diversity, we, as Indians, feel a profound attachment to our national identity. This attachment forms the foundation of National Integration, the idea that we are one people, bound together by shared customs, history, and aspirations.

But have you ever wondered what truly holds us together as a nation? How do we maintain unity while celebrating such remarkable diversity? The answer lies in many things, but one of the most powerful tools is Education.

Education doesn't just impart knowledge; it shapes minds, attitudes, and values. It fosters a sense of belonging and shared identity that transcends regional, linguistic, and cultural barriers. As Dr. S. Radhakrishnan wisely said, "National integration cannot be built by brick and mortar; it has to grow silently in the minds and

 ISSN 2581-4133

hearts of people." This silent growth happens most effectively through education.

Imagine a classroom filled with students from different regions, speaking different languages, and following different traditions. Through their lessons, they learn not just about history and science but about the shared legacy of their nation. They explore stories of heroes who united us, celebrate festivals that bind us, and understand the principles that guide our democracy. In doing so, they start seeing themselves not as isolated individuals, but as part of a larger, cohesive whole.

Education also plays a key role in breaking down prejudices and fostering mutual respect. When students learn about the diverse cultural practices and traditions of their peers, they begin to appreciate the beauty in differences. Have you ever participated in a cultural exchange program or witnessed a school celebrating festivals of all religions? These moments teach invaluable lessons—lessons about tolerance, unity, and the idea that our diversity is not a challenge but a strength.

Through education, we also develop critical thinking. It empowers young minds to rise above narrow divides like caste, region, or religion. It encourages them to question stereotypes, understand societal issues, and contribute to solutions that strengthen the fabric of our nation. After all, a rational mind is the backbone of a united society.

Think about the power of a textbook that tells stories of our freedom struggle, introduces us to our constitution, or highlights the incredible scientific achievements of Indians. It instills pride in our identity and reminds us of the collective effort that has built our nation. Education is not just about learning facts; it's about creating informed citizens who understand their rights, responsibilities, and the values that hold us together.

Moreover, schools and colleges are spaces where young people come together to engage in activities that nurture unity. Whether it's playing sports, participating in debates, or performing in cultural festivals, these experiences teach teamwork, respect, and solidarity. Celebrating Independence Day or Republic Day in schools, for example, is not just a ritual; it's a moment to reflect on what it means to be Indian.

National integration emphasizes the importance of mutual respect, cooperation, and shared values in building a harmonious society. It is a powerful idea, manifesting through collective action in the nation's interest, ensuring social harmony, justice, cultural enrichment, and national progress. Among the many avenues that contribute to national integration, education stands out as a pivotal force.

Even outside the classroom, education extends its role. Educational tours to different parts of the country offer students firsthand experiences of India's diversity. Have you ever visited a place vastly different from your own hometown and felt a newfound appreciation for how beautifully varied our country is? That's the magic of exposure—it turns understanding into empathy.

Education also nurtures democratic values. It teaches us about the importance of equality, justice, and participation. Students learn to respect the rule of law, value their freedom, and understand their responsibility in preserving the unity of the nation. This sense of shared purpose is at the heart of national integration.

Finally, let's not forget the power of youth. Programs like NCC, NSS, and Scouts & Guides bring young people together to work for community welfare, instilling a sense of discipline, leadership, and shared responsibility. These experiences create bonds that transcend differences and forge a collective spirit.

National integration is not an abstract idea—it's a lived reality, nurtured by the way we educate our future generations. When we equip young minds with knowledge, empathy, and values, we're not just preparing them for their careers; we're preparing them to be the torchbearers of a united and harmonious India.

So, the next time you think about what keeps India together, remember the quiet yet transformative role of education. It is the thread that weaves us into a single fabric—a nation that stands tall, united in its diversity, and strong in its shared identity. ❑